जुलाई 2014

दादावाणी

Price ₹10

'ज्ञानीपुरुष' का शुद्ध प्रेम...

जो प्रेम ऐसा खुला दिखाई दे, वहाँ पर तो बच्चें भी बैठे रहते हैं, अनपढ़ भी बैठे रहते हैं, पढ़े-लिखे भी बैठे रहते हैं, बुद्धिशाली भी बैठे रहते हैं, सभी लोग समा जाते हैं। क्योंकि वहाँ का वातावरण इतना सुंदर होता है!

संपादक : डिम्पल महेता
वर्ष : ९ अंक : ९
अखंड क्रमांक : १०५
जुलाई २०१४

संपर्क सूत्र :
त्रिमंदिर, सीमंधर सिटी,
अहमदावाद-कलोल हाइ-वे,
पो.ओ.: **अडालज**,
जि.: गांधीनगर-382421.
फोन : (079) 39830100
email: dadavani@dadabhagwan.org
www.dadabhagwan.org
दादावाणी संबंधी शिकायत के लिए:
8155007500

Printed & Published by
Dimple Mehta on behalf of
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj -
382421. Dist-Gandhinagar.
Owned by
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj -
382421. Dist-Gandhinagar.
Printed at
Amba Offset
Basement, Parshvanath
Chambers, Nr.RBI,
Usmanpura, Ahmedabad-14.
Published at
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj -
382421. Dist-Gandhinagar.
Total 32 pages including cover

सबस्क्रिप्शन (सदस्यता शुल्क)
१५ साल
भारत : ७५० रुपये
यू.एस.ए. : १५० डॉलर
यू.के. : १०० पाउन्ड
वार्षिक
भारत : १०० रुपये
यू.एस.ए. : १५ डॉलर
यू.के. : १० पाउन्ड
भारत में D.D. / M.O.
'महाविदेह फाउन्डेशन' के नाम
से संपर्कसूत्र के पते पर भेजें।

दादावाणी

'ज्ञानीपुरुष' - बेजोड़ प्रेमावतार

संपादकीय

इस जगत् में प्रेम शब्द से कौन अन्जान होगा? लेकिन सही मायनों में प्रेम क्या है, वह कौन जानता होगा? संसार में जिस प्रेम शब्द का उपयोग होता है, वह तो वास्तव में आसक्ति है। सच्चा प्रेम तो जगत् ने देखा ही कहाँ है? सच्चा प्रेम तो वह होता है जो कभी भी कम-ज़्यादा नहीं होता। अपमान करने पर भी वैसा ही प्रेम और मान देने पर भी वैसा ही प्रेम और निरंतर वैसे का वैसा ही रहे। ऐसा सच्चा प्रेम कहाँ प्राप्त होता है? वीतरागों से, ज्ञानियों से, जो खुद प्रेमस्वरूप हो चुके होते हैं।

ऐसे ही प्रेमस्वरूप परम पूज्य दादा भगवान, जिन्होंने एक साधारण व्यक्ति में से सही समझ और स्व पुरुषार्थ से, साधारण दशा से मुक्त होकर एक असाधारण व्यक्तित्व को प्राप्त किया और उस व्यक्तित्व में प्रेम की सौरभ निरंतर प्रसरित होती थी, जिसे उनके परिचय में आए हुए हर एक व्यक्ति ने अनुभव करके हर्ष के अनोखे भाव का अनुभव किया।

जो खुद प्रेमस्वरूप हो चुके हैं और जिनमें इस जगत् के सभी जीवों के प्रति निस्वार्थ, किसी भी तरह के अपेक्षा रहित प्रेम के भाव हैं, ऐसे व्यक्ति को विशेषणों द्वारा कैसे नवाज़ा जा सकता है? वास्तव में तो वह अप्रतिम, निर्मल प्रेम ही साक्षात परमात्मा है। उन्हीं प्रकट परमात्मा 'दादा भगवान' की प्रेमस्वरूप की विशालता का परिचय प्राप्त करके अहोभाव से हृदय से सहज वंदन हो जाते हैं। अहो, अहो उस प्रेमल पुष्प की कोमलता और सौरभ ! वह तो जो अनुभव करे वही समझेगा न?

प्रस्तुत संकलन में हमें दादाश्री के प्रेम का अनुभव पूर्ण व्यवहार का हूबहू चित्रण, कि जो सही शब्दों में ही नहीं, लेकिन जो अनुभवगम्य है उसका करुणा से भरपूर संकेत एक-एक वाक्य में देखने और जानने मिलता है।

शुद्ध प्रेम कि जो ईश्वरीय प्रेम कहलाता है, जिसमें कि कोई भी राग-द्वेष नहीं है, मतभेद नहीं है, अपेक्षा नहीं है, याचना नहीं है, लेकिन सिर्फ नि:स्वार्थ प्रेम है। और वहाँ आसक्ति और विकार नहीं होते, होती है सिर्फ निर्मलता, अभेदता, निर्दोष दृष्टि और एक मात्र सामनेवाले के कल्याण की भावना। और वह प्रेम एक व्यक्ति तक ही सीमित न रहकर पूरे वर्ल्ड के लिए, जीवमात्र के लिए असीम रूप से प्रवाहित होता है।

ऐसा निस्वार्थ और आसक्ति रहित शुद्ध प्रेम कब उत्पन्न होता है? जबसे शुद्धात्मा पद प्राप्त होता है तब से। खुद शुद्धात्मा पद में रहकर, फाइल नं-१ से अलग रहकर, हर एक को शुद्ध स्वरूप से देखे, तभी से शुद्ध प्रेम की शुरूआत होने लगती है और इस तरह अभ्यास होते-होते अंत में खुद ही प्रेमस्वरूप हो जाता है।

परम पूज्य दादाश्री की यही भावना थी कि जो प्रेम आपने हमसे चखा है प्रेमस्वरूप बनकर वैसा ही प्रेम आप, दूसरों के प्रति बहाओ। उस प्रेम के पुनीत प्रवाह में आप तो तैरकर मोक्ष के किनारे तक पहुँच सकोगे, लेकिन दूसरों की उन्नति करने का सामर्थ्य भी प्राप्त कर सकोगे। तो चलिए इस पुनीत प्रेम प्रसादी के आराधन से हम भी प्रेमस्वरूप बनने का निश्चय करके, वैसा बनने का पुरुषार्थ शुरू करें।

जय सच्चिदानंद

पाठकों से...

'दादावाणी' सामायिक में मुद्रित पाठ्य सामग्री मूलत: गुजराती 'दादावाणी' का हिन्दी रूपांतर है। कोष्ठक में दिए गए शब्द या तो अंग्रेज़ी शब्द का अर्थ हैं अथवा शब्द का तात्पर्य स्पष्ट करने हेतु वृद्धित किए गए वाक्यांश है। यहाँ पर 'आत्मा' शब्द को गुजराती और संस्कृत की तरह पुल्लिंग में प्रयोग किया गया है। जहाँ पर भी चंदूभाई नाम का प्रयोग हुआ है, वहाँ पर पाठक खुद को समझें। 'दादावाणी' के इस अंक में अगर आप कोई बात न समझ पाएँ तो प्रत्यक्ष सत्संग में पधारकर समाधान प्राप्त करें। अनुवाद में कोई कमी नज़र आए तो हमें सूचित करने की कृपा करें। ताकि भविष्य में सुधार किया जा सकें ऐसी क्षतियों के लिए हम आपके क्षमाप्रार्थी है।

'ज्ञानीपुरुष' - बेजोड़ प्रेमावतार

प्रेम अभिव्यक्त करना वही सच्चा सुख है

प्रश्नकर्ता : जीवों को किस प्रकार से सुख दिया जा सके? इन में किस प्रकार का सुख दूसरों को दिया जाए कि उसके फल स्वरूप देनेवाले को अधिक से अधिक सुख उत्पन्न हो? विस्तार से समझाने की कृपा करिएगा।

दादाश्री : सुख तो, (किसी) मनुष्य को जब अड़चन होती है, तब उसकी अड़चन खत्म करने के लायक हमारे पास यदि अतिरिक्त चीज़ हो और उसे दे दें तो इससे उस व्यक्ति को आनंद होता है और उसे सुख मिलता है। और उस सुख के फल स्वरूप आपको सुख मिलेगा ही। तो अगर आपको सुख चाहिए तो लोगों को सुख दो, दु:ख चाहिए तो दु:ख दो। जो चाहिए वही दो, भगवान का और कोई नियम नहीं है। यह आपका जो दु:ख है वह आपका दिया हुआ दु:ख है, जो आपके यहाँ वापस आया है। इस पर से समझ लेना कि 'आप कैसा देनेवाले हो, कैसे व्यापारी हो।' वह आपकी समझ में आ जाएगा।

सुख तो, सच्चा सुख कैसे दिया जाए? निस्वार्थ प्रेम देकर! किसी भी प्रकार का निस्वार्थ प्रेम हो तो वही सच्चा सुख दे सकता है। अभी स्त्री-पत्नी-बच्चे सबका प्रेम स्वार्थी ही है। यदि सिनेमा (देखने) के लिए नहीं ले जाएँ दो चार महीनों तक तो फिर मुँह बिगड़ जाएगा। यानी यह सारा स्वार्थी प्रेम है। यदि निस्वार्थ प्रेम रखो तो लोगों को आनंद होता है।

प्रश्नकर्ता : ठीक है।

दादाश्री : ज़्यादा से ज़्यादा सुख उत्पन्न करने के लिए बगैर निस्वार्थ प्रेम रखना चाहिए।

कबीर साहब ने दी प्रेम की सही व्याख्या

अरे, मैं ही बचपन से प्रेम की परिभाषा ढूँढ रहा था, और मुझे लगा, प्रेम क्या होता होगा? ये लोग 'प्रेम-प्रेम' किया करते हैं, वह प्रेम कैसा होगा? उसके बाद सभी पुस्तकें देखीं, सभी शास्त्रों पढ़े, लेकिन प्रेम की परिभाषा किसी जगह पर मिली ही नहीं। मुझे आश्चर्य हुआ कि किसी भी शास्त्र में 'प्रेम क्या है', ऐसी परिभाषा ही नहीं दी! फिर जब कबीर साहब की पुस्तक पढ़ी, तब दिल को ठंडक मिली कि प्रेम की परिभाषा तो इन्होंने दी है। वह परिभाषा मुझे काम आई। वे क्या कहते हैं कि,

'घड़ी चढ़े, घड़ी उतरे, वह तो प्रेम न होय,
अघट प्रेम ही हृदय बसे, प्रेम कहिए सोय।'

उन्होंने (सही) परिभाषा दी, मुझे तो बहुत सुंदर लगी थी। 'कहना पड़ेगा कबीर साहब, धन्य है!' यही सच्चा प्रेम है। जो घड़ी में चढ़े और घड़ी में उतरे क्या वह प्रेम कहलाएगा?

सच्चे प्रेम की परिभाषा

प्रश्नकर्ता : तो सच्चा प्रेम किसे कहा जाता है?

दादाश्री : सच्चा प्रेम, जो चढ़े नहीं, घटे नहीं वह! हम ज्ञानियों का प्रेम ऐसा होता है, जो कम-

ज़्यादा नहीं होता। ऐसा हमारा सच्चा प्रेम पूरे वर्ल्ड पर होता है। और वह प्रेम तो परमात्मा है।

प्रश्नकर्ता : फिर भी जगत् में कहीं तो प्रेम होगा न?

दादाश्री : किसी जगह पर प्रेम ही नहीं है। प्रेम जैसी चीज़ ही इस जगत् में नहीं है। सारी आसक्ति ही है। वह तो जब उल्टा बोलते हैं न, तब तुरंत पता चल जाता है।

अभी आज कोई आए थे विलायत से, तो आज तो उनके साथ ही बैठे रहने में अच्छा लगता है। उसके साथ ही खाना-घूमना अच्छा लगता है। और दूसरे दिन वह हमसे कहे, 'नोनसेन्स जैसे हो गए हो।' तो हो गया! और 'ज्ञानीपुरुष' को तो सात बार नोनसेन्स कहें तब भी कहेंगे, 'हाँ भाई, बैठ, तू बैठ।' क्योंकि 'ज्ञानी' जानते हैं कि यह बोलता ही नहीं, यह रिकॉर्ड बोल रही है।

सच्चा प्रेम तो कैसा है कि जिसमें द्वेष ही नहीं होता है। जहाँ प्रेम में प्रेम के पीछे द्वेष है, उस प्रेम को प्रेम कहा ही कैसे जाए? निरंतर प्रेम होना चाहिए।

नहीं बढ़े नहीं घटे, वह सच्चा प्रेम

प्रश्नकर्ता : क्या सच्चा प्रेम यानी कम-ज़्यादा नहीं होता?

दादाश्री : सच्चा प्रेम कम-ज़्यादा नहीं होता, वैसा ही होता है। यह तो प्रेम हुआ हो तो यदि कभी गालियाँ दें तो उसके साथ झगड़ा हो जाए, और फूल चढ़ाएँ तो वापस हमसे चिपट जाता है।

प्रश्नकर्ता : व्यवहार में घटता-बढ़ता है उसी प्रकार ही होता है।

दादाश्री : लोगों का प्रेम तो पूरा दिन कम-ज़्यादा ही होता रहता है न! बेटे-बेटियों सभी पर देखो न कम-ज़्यादा हुआ ही करता है न! रिश्तेदार, सभी जगह बढ़ता-घटता ही रहता है न! अरे, खुद पर भी बढ़ता-घटता ही रहता है न! घड़ी में शीशे में देखे तो कहे, 'अब मैं अच्छा दिखता हूँ।' एक घड़ी बाद 'नहीं, ठीक नहीं है' कहेगा। यानी खुद पर भी प्रेम कम-ज़्यादा होता है। यह ज़िम्मेदारी नहीं समझने से ही यह सब होता है न! कितनी बड़ी ज़िम्मेदारी!

प्रश्नकर्ता : तब ये लोग कहते हैं न प्रेम सीखो, प्रेम सीखो!

दादाश्री : लेकिन यह प्रेम ही नहीं है न! ये तो लौकिक बातें हैं। इसे प्रेम कौन कहे फिर? लोगों का प्रेम जो बढ़ता-घटता है वह सब आसक्ति, निरी आसक्ति है! जगत् में आसक्ति ही है। प्रेम जगत् ने देखा नहीं है।

जगत् का प्रेम वह आसक्ति है

दुनिया में जहाँ आप देखते हो, वह सारा ही प्रेम मतलबी प्रेम है। पत्नी-पति का, माँ-बाप का, बाप-बेटे का, माँ-बेटे का, सेठ-नौकर का, हर एक का प्रेम मतलबी होता है। मतलबी है, वह कब समझ में आता है कि जब वह प्रेम फ्रेक्चर हो जाए। जब तक मिठास बरतती है तब तक कुछ नहीं लगता, लेकिन कड़वाहट खड़ी हो तब पता चलता है। अरे, पूरी ज़िंदगी बाप के संपूर्ण कहे में रहा हो और एक ही बार गुस्से में, संयोगवश यदि बाप को बेटा 'आप बगैर अक्कल के हो' ऐसा कहे, तो पूरी ज़िंदगी के लिए संबंध टूट जाता है। बाप कहे, तू मेरा बेटा नहीं और मैं तेरा बाप नहीं। यदि सच्चा प्रेम हो तब तो वह हमेशा के लिए वैसे का वैसा ही रहे, फिर गालियाँ दे या झगड़ा करे। उसके सिवा जो प्रेम है उस प्रेम को तो सच्चा प्रेम किस तरह कहा जाए? मतलबी प्रेम, उसे ही आसक्ति कहा जाता है। वह तो व्यापारी और ग्राहक जैसा प्रेम है, सौदेबाज़ी है। जगत् का प्रेम तो आसक्ति कहलाता है। प्रेम का अतिरेक वह आसक्ति।

जगत् आसक्ति को प्रेम मानकर दुविधा में पड़ता है। पत्नी को पति से काम और पति को पत्नी से काम। यह सब काम से खड़ा हुआ है। काम नहीं होने पर भीतर से सब शोर मचाते हैं, धावा बोलते हैं। संसार में एक मिनट के लिए भी कोई अपना नहीं बना है। सिर्फ 'ज्ञानीपुरूष' ही अपने हैं। इसलिए भगवान ने कहा है, 'जीवमात्र अनाथ है।'

प्रश्नकर्ता : तो प्रेम और राग ये दोनों शब्द समझाइए।

दादाश्री : राग, वह पौद्गलिक वस्तु है और प्रेम, वह सच्ची चीज़ है। अब प्रेम कैसा होना चाहिए कि जो बढ़े नहीं, घटे नहीं, वही प्रेम कहलाता है। और बढ़े-घटे वह राग कहलाता है। इसलिए राग और प्रेम में फर्क ऐसा है कि वह एकदम बढ़ जाए तो उसे राग कहते हैं, इसलिए फँसा फिर। यदि प्रेम बढ़ जाए तो राग में परिणमित होता है। प्रेम उतर जाए तो द्वेष में परिणमित होता है। इसलिए वह प्रेम कहलाता ही नहीं न! वह तो आकर्षण और विकर्षण है। इसलिए अपने लोग जिसे प्रेम कहते हैं, उसे भगवान आकर्षण कहते हैं।

सच्चा प्रेम न चढ़े न उतरे

प्रेम तो वह कहलाता है कि साथ ही साथ रहना अच्छा लगे। उसकी सारी ही बातें अच्छी लगे। उसमें एक्शन और रिएक्शन नहीं होते। प्रेम प्रवाह तो एक सरीखा ही बहा करता है। घटता-बढ़ता नहीं है, *पूरण-गलन* (चार्ज-डिस्चार्ज होना) नहीं होता। आसक्ति *पूरण-गलन* स्वभाव की होती है।

कोई लड़का बेवकूफीवाली बात करे कि 'दादाजी, आपको तो मैं अब खाने पर भी नहीं बुलाऊँगा और पानी भी नहीं पिलाऊँगा', तब भी 'दादाजी' का प्रेम उतरे नहीं और वह अच्छा भोजन खिलाए तब भी 'दादाजी' का प्रेम चढ़े नहीं, उसे प्रेम कहा जाएगा। यानी भोजन करवाए तो भी प्रेम और न करवाए तो भी प्रेम, गालियाँ दे तो भी प्रेम और गालियाँ न दे तो भी प्रेम, सभी ओर प्रेम ही दिखता है। इसलिए सच्चा प्रेम तो हमारा कहलाता है। वैसे का वैसा ही है न? पहले दिन जो था, वैसे का वैसा ही है न? अरे, आप मुझे बीस साल के बाद मिलो न, फिर भी प्रेम बढ़े-घटे नहीं, प्रेम वैसे का वैसा ही दिखे! ज्ञानी का प्रेम तो शुद्ध प्रेम है। ऐसा प्रेम कहीं भी देखने को नहीं मिले।

ज्ञानी का शुद्ध प्रेम

प्रश्नकर्ता : दादाजी, शुद्ध प्रेम यानी क्या?

दादाश्री : जिसमें किसी भी प्रकार का मतलब नहीं होता। वह मेरे काम आएगा ऐसा नहीं रहता। यह मेरे काम आएगा, वह शुद्ध प्रेम नहीं। यह हमारा तुझ पर जो शुद्ध प्रेम है उसमें हमारा क्या मतलब होगा, वह बता? वह शुद्ध प्रेम है। ये दादा रखते हैं वह शुद्ध प्रेम कहलाता है। कुछ मतलब नहीं। किसी से कुछ भी चाहिए ही नहीं। कोई इच्छा भी नहीं। सिर्फ आपके हित के लिए, आपके कल्याण के लिए ही प्रेम है। और एक सरीखा प्रेम है। कम-ज़्यादा दिखाई देता है, वह उसके प्रारब्ध के अधीन निमित्त है।

प्रश्नकर्ता : आपने कहा है कि शुद्धात्मा के सिवा कोई भी शुद्ध प्रेम नहीं दे सके।

दादाश्री : नहीं दे सकता। अब आप शुद्ध प्रेम रखने का अभ्यास कर सकते हो। सामनेवाला गाली दे तब भी शुद्ध दिखाई देना चाहिए। क्योंकि गाली जो देता है वह तो अपने कर्म के उदय के कारण यह लट्टू (प्रकृति) गाली देता है हमें। लेकिन लट्टू से बाहर 'वे' खुद बैठे हैं। लट्टू जुदा और शुद्धात्मा जुदा। लट्टू क्रियाकारी होता है, शुद्धात्मा अक्रिय होता है।

प्रश्नकर्ता : क्या अशुद्ध प्रेम में भी ऐसे शुद्ध प्रेम के क्षण हो सकते हैं?

दादाश्री : हो सकते हैं न! आपको, आपके शुद्ध प्रेम के क्षण उत्पन्न होने चाहिए न सब, उसके बाद ही तो मुँह पर तेज आना शुरू हुआ। वर्ना कहीं तेज होगा क्या? रूपवान दिखाई देगा, गोरा दिखाई देगा लेकिन तेज (प्रभाव) नहीं होगा। शुद्ध प्रेम उत्पन्न हुआ इसलिए तेज आया। अब आपके मन में ऐसा है कि अब हमें किसी से कुछ भी नहीं चाहिए। अब तो बस *निबेड़ा* (निपटारा) लाना है वही प्राथमिकता है। वहीं से शुद्ध प्रेम उत्पन्न होता है।

प्रश्नकर्ता : दादाजी, उस शुद्ध प्रेम में हमें किसी से कुछ भी लेने की आशा नहीं होती। किसी से अपेक्षा नहीं होती।

दादाश्री : किसी प्रकार का भाव ही नहीं होता न! विषय से संबंधित या पैसे से संबंधित या मदद से संबंधित, ऐसे किसी भी प्रकार के भाव नहीं हों, वही शुद्ध प्रेम है।

प्रश्नकर्ता : लेकिन क्या इसमें हमें देने की भावना हो सकती है?

दादाश्री : नहीं, देने की भावना भी नहीं। वह भी *लागणी* (लगाव) कहलाती है और जो देता है वह लेगा भी, वह तो रिटर्न होगा। इसलिए देना भी नहीं है। फिर लेना-देना अपना ऐसा सब व्यवहार, वो अलग चीज़ है। लेकिन शुद्ध प्रेम अर्थात् उसमें तो कुछ भी लेना-देना नहीं होता। प्रेम यानी आपके लिए भी वही प्रेम! *लागणी* वगैरह नहीं। हमारा प्रेम सभी पर रहता ही है न! देखो न, टूटता है क्या कभी?

प्रश्नकर्ता : नहीं।

दादाश्री : नहीं टूटता।

प्रश्नकर्ता : लेकिन चारित्र में घुलमिल जाए तो प्रेम आता है न दादा। यानी अपने केरेक्टर में आ जाए तभी ही हो सकता है वह शुद्ध प्रेम?

दादाश्री : हाँ, इसलिए अब आपमें वे गुण उत्पन्न होने लगे हैं। और अन्य गुण (कषाय) अपने घर जाने लगे हैं। अब, जब आनेवाले आ रहे हैं और वो जानेवाले चले जाएँगे, तब सब राह पर आएगा न! अब जानेवाले सही में जाने लगे हैं यहाँ से। समूह निकलने लगे हैं सही में।

जहाँ शुद्ध प्रेम वहाँ प्रकट होता है परमात्मा पद

'शुद्ध प्रेम' ऐसी चीज़ है जो किंचित्मात्र भी इफेक्टिव नहीं होता। *लागणी* जड़ हैं, इसलिए 'इफेक्टिव' होते हैं। 'शुद्ध प्रेम' चेतन है और अनइफेक्टिव है। किसी से प्रभावित हो जाते हो क्या आप?

प्रश्नकर्ता : कोई शुद्ध प्रेमी हो तब?

दादाश्री : नहीं, दूसरी जगहों पर, घर पर भी या कहीं और जाओ वहाँ पर?

प्रश्नकर्ता : किसी से भी प्रभावित नहीं होते हैं। सिर्फ आप जैसों से प्रभावित हो जाते हैं, दादाजी।

हमारा प्रेम शुद्ध है इसलिए लोगों पर असर होता है, लोगों को फायदा होता है, नहीं तो फायदा ही नहीं होगा न! एक ही बार कभी जब 'ज्ञानीपुरुष' या भगवान हों तब प्रेम देख सकता है, उस प्रेम में कम-ज़्यादा नहीं होता, अनासक्त होता है, ज्ञानियों का प्रेम वही परमात्मा है। सच्चा प्रेम वही परमात्मा है, और कोई चीज़ परमात्मा है नहीं। जहाँ सच्चा प्रेम है, वहाँ परमात्मापन प्रकट होता है!

ज्ञानी का प्रेम निस्वार्थ

यह हमारा प्रेम निस्वार्थ है, इसलिए हमारा प्रेम बढ़ता-घटता नहीं है। वह भाई, दादा भगवान के लिए (टेढ़ा) बोल रहा था, फिर भी हमें हर्ज़ नहीं और यदि कोई दादा भगवान को फूल चढ़ाए फिर भी हमें हर्ज़ नहीं। क्योंकि हमें तो सत्य वस्तु से काम है न? हमें तो काम से काम है न? हम क्यों दूसरी

झंझट में पड़े? हमें तो प्रेम है आप सब पर। ये सब बैठे हुए हैं (उन सभी पर) प्रेम हैं। उस व्यक्ति ने टेढ़ा बोल दिया तो उसमें हमें एतराज़ नहीं है। हमने खुद उससे (असीम जय जयकार) बुलवाया, बल्कि सुखी हो गया और आनंद हो गया उसे। हमें गाली वाली देनी हो तो भी हर्ज़ नहीं है, जिस किसी को (गालियाँ) देनी हो, जिसे शौक हो न, वह सुना दे, कहेंगे। उसका शौक तो पूरा हो जाएगा न, भले मानस का!

हमारा एक फॉलोअर (अनुयायी) था, वह ब्रह्मचारी था। जवान लड़का था। एक दिन मुझ से कहने लगा, 'दादाजी मुझे खराब विचार आते हैं।' मैंने कहा, 'क्या खराब विचार आते हैं?' मैंने कहा, 'स्त्री के बारे में आते हैं क्या? या अन्य कोई आते हैं?' तब कहे, 'नहीं, नहीं। दूसरे बहुत खराब विचार आते हैं।' मैंने कहा, 'लेकिन क्या खराब विचार आते हैं, मुझे बता तो सही।' तब कहा, 'आप पर गोली चलाने का विचार आता है।' मैंने कहा, 'अरे, उसका कोई हर्ज़ नहीं है हमें। तुझे जो यह विचार आता है, वह किस कारण से ऐसा हुआ है?' तब कहा, 'आप विधि करवा रहे थे न उसकी, तब मैंने तीन बार प्रयत्न किया लेकिन मेरा मेल बैठा ही नहीं। इसलिए मुझे ऐसा लगा कि इन दादा पर गोली चला देनी चाहिए।' मैंने कहा, 'ठीक है, इसमें दादा की भूल है।' अब इतना फ्रेंक (निखालस) बोल दिया उस लड़के ने। इसलिए बल्कि मैंने उसे बहुत प्रेम दिखाया कि ओहोहो! इस काल में भी इतना फ्रेंक बोल रहा हैं। वर्ना फ्रेंक बोलने में तो घबराहट हो जाए। मुझ से ऐसा कहने में तो घबराहट हो जाए। फिर भी उसने फ्रेंकली कह दिया साथ ही खुद बहुत पश्चाताप कर रहा था। 'ऐसे विचार क्यों आते हैं, दादाजी? इसके कारण मुझे मरने का मन होता है।' अब उस स्थिति में हम क्या करते? उस पर प्रेम दिखाते हैं बेचारे को। उसका दिमाग़ फिर गया और ऐसे विचार आ गए, उसमें वह करे भी क्या बेचारा? उसे खुद को भी ऐसे विचार पसंद नहीं हैं।

उसने कहा, 'उसके बाद भी मुझे वही के वही विचार आते रहते हैं।' मैंने कहा, 'तेरी बात सही है, मेरी गलती है।' तब सिर पर हाथ रखकर आशीर्वाद दिए, उसके बाद फिर बंद हो गए। लेकिन यदि दूसरी जगह पर होते तो क्या करते वे, कह तो सही? जबकि यहाँ तो प्रेम दिखेगा, शुद्ध प्रेम! नज़रों से देखना हो तो शुद्ध प्रेम, वही परमात्मा है।

सामनेवाले का धक्का हमें लग जाए उसमें हर्ज नहीं है, लेकिन हमारा घक्का सामनेवाले को नहीं लगना चाहिए, वह हमें देखना है। तभी सामनेवाले का प्रेम संपादन होगा।

शब्द नहीं बल्कि प्रेम काम करता है

प्रश्नकर्ता : अमरिका में जो सभी वे यंगस्टर्स, टीनेजर्स के साथ सत्संग किया और उन लोगों के हृदय परिवर्तन हो गए, और सब मीट (मांसाहार) वगैरह छोड़ दिया, डेटिंग वगैरह सब बंद कर दिया और दादामय रहने लगे। तो दादाजी ने उन सब लोगों के साथ ऐसा कैसा सत्संग किया? क्या बात-चीत की, क्या समझाया?

दादाश्री : शब्द काम नहीं करते, मेरा प्रेम काम करता है। ये जो छोटी-छोटी दस, बारह, चौदह और पंद्रह साल की लड़कियाँ पैर दबा रही थीं। इसलिए फिर मैंने कहा, 'अरे! क्या चुभा?' उन लोगों ने नाखून बढ़ाए हुए थे। अत: मेरे ऐसे पूछने पर कि क्या चुभ गया वे घबरा गईं बेचारी। उन्हें लगा, दादाजी को कुछ चुभ गया। मैंने कहा, 'यह क्या किया तूने? नाखूनों को किसलिए बढ़ा रखे हैं? मुझे लग रहे हैं ये तो।' इस पर कहने लगीं, 'मुझे शौक है इसका तो।' तब मैंने कहा, 'कब तक ऐसे ही लंबे रहने दोगी? एकाध साल तक रहने देना, फिर काट डालना।' तब कहने लगी, 'नहीं कल ही काट डालूँगी।' यों तुरंत काट दिया।

अब यदि आप उसे ऐसा कहो कि, 'नाखून

काट डालना, वर्ना मैं शाम को खाना नहीं दूँगी।' यदि तुझे ऐसा बोलना आता है तो क्या उसे कुछ नहीं आएगा? तुझे चैलिन्ज देना आ गया तो क्या उसे चैलिन्ज देना नहीं आएगा कि 'जाओ नहीं काटूँगी, तुमसे जो हो जाए वो करना,' कहेगी। वहाँ प्रेम से काम लेना चाहिए। प्रेम से वश हो जाते हैं। प्रेम से तो बच्चे, पति या जानवर हो या बाघ हो सभी वश हो जाते हैं।

डाँट नहीं, प्रेम से जीता जा सकता है

एक बच्चे ने मेरे साथ आधा घंटे ही बात-चीत की होगी। फिर भी वह पुस्तकें ले गया। कहने लगा, 'आपकी तस्वीर दीजिए।' कितने साल का बच्चा था।

प्रश्नकर्ता : तेरह साल का।

दादाश्री : तस्वीर ले गया, पुस्तकें माँगने पर, पुस्तकें दी। और पुस्तक उसने पढ़ी भी सही। और आज आते समय भी मुझे बार-बार देख रहा था, तस्वीरें ले रहा था। वह बंध गया मेरे साथ। इसलिए बाहर प्रेम नहीं ढूँढेगा, मेरी तस्वीरों से प्रेम मिलेगा उसे। प्रेम से ही जगत् जीवित है। लोग क्या बच्चों को मारते हैं? डराते ही रहते हैं! बेअक्ल है और ये बड़े अक्लमंद! 'जॉब' (नौकरी) का तो ठिकाना नहीं है और आए बड़े अक्लमंद! उनकी सास भी उनसे लड़ती है। ऐसा तो कौन कह सकता है? मेरे जैसा, जिसे कोई डाँटनेवाला नहीं है। जिसे कोई डाँटनेवाला हो, तो आप कैसे कह सकते हो? आपको बात समझ में आ रही है? यह काम में आएगी?

और बच्चों को तो मारना ही मत। यदि कोई भूल-चूक हो जाए न, तो धीरे से सिर पर हाथ रखकर समझाने की ज़रूरत है। प्रेम देंगे तभी बच्चे समझदार बनेंगे।

अब यदि मैं बड़ी उम्रवाले को मार दूँ न, तब भी उसे गुस्सा नहीं आता, उसका क्या कारण है? प्रेम से मारता हूँ। इस लड़के को बार-बार मारता हूँ न, तो भी खुश होता है और तू ज़रा मारकर देख? क्योंकि तुझ में अहंकार है इसलिए उसका अहंकार जागृत हो जाता है। मुझ में प्रेम है इसलिए उसमें प्रेम जागृत होता है। वह तो ऐसा है कि मैं भले ही कितना भी क्यों न मारूँ तो भी मुझे कुछ नहीं रहता। मुझ से खुश रहता है क्योंकि मैं प्रेम से देखा करता हूँ जबकि तुझ में तो अहंकार भरा हुआ है, इसलिए फिर उस लड़के का भी अहंकार जाग जाता है और इसलिए फिर बाद में दोनों का अहंकार टकराएगा, 'आ जा' कहेगा।

वह प्रेम तो देखा जगत् ने

उस वक्त जब अमरिका में, न्यूयॉर्क स्टेशन पर अस्सी लोग रो रहे थे, तब न्यूयोर्क में सभी लोग देख रहे थे कि ये क्या देखकर रो रहे हैं, ये बड़ी उम्र के लोग! वह तो जगत् ने अनुभव किया प्रेम का। जगत् ने कभी भी प्रेम देखा ही नहीं। जो देखा है वह आसक्ति देखी है। आसक्ति अर्थात् क्षणभर में कम हो जाती है, एकदम ठंडी पड़ जाती है। अरे भाई, अभी तो उफान आ रहा था, फिर क्यों बंद हो गया? तब कहता है, 'ठंडा पानी डाल दिया।' यदि दूध में उफान आ रहे हो और फिर ठंडा पानी डाल दें तो क्या होगा? वह सारी आसक्ति कहलाती है। कम-ज़्यादा, कम-ज़्यादा होती रहती है। रात को जब सिनेमा देखकर लौटे न तब तो मेरा और तेरा, मेरा और तेरा, तू और मैं एक ही हैं, ऐसी मीठी बातें कर रहे होते हैं और सुबह उठें तब झगड़ा करने लगते हैं। जहाँ प्रेम होता है वहाँ झगड़ा नहीं होता। और कुछ नहीं होता है। हम तो सबको प्रेम से देखते हैं। हमें दूसरा माल कुछ काम का नहीं है। हम पूरे जगत् को निर्दोष देखकर चलते हैं।

अंतवाली है हर एक चीज़ इसलिए धीरज धरो

हमारे यहाँ एक पार्टनर के भाई थे। वे रात को

दो बजे आते थे। क्या-क्या करके आते होंगे, उसका वर्णन करने जैसा नहीं है। वह आप समझ जाओ न! अत: फिर बाद में घर में सबने निश्चय किया कि भाई, इसका क्या करेंगे? इसे डाँटा जाए या घर में आने नहीं दें या क्या हल निकालें इसका। यह बहुत बड़ा प्रश्न पैदा हो गया न? हाँ, वह भी अनुभव कर लिया था। बड़े भाई समझाने गए, तो बड़े भाई को कहने लगा कि 'मारे बगैर छोडूँगा नहीं।' वे फिर मुझसे कहने लगे कि 'यह तो ऐसे बोल रहा है।' फिर मैंने उनसे कहा कि 'कुछ भी मत कहना। उसे जब आना हो तब आने दो और जब जाना हो तब जाए। आपको राइट भी नहीं बोलना है और रोंग भी नहीं बोलना है। राग भी नहीं रखना है और द्वेष भी नहीं करना है। सिर्फ समता और करुणा रखो।' तीन-चार साल के बाद वह फर्स्ट क्लास हो गया। अब अच्छा बन गया। लेकिन चार साल तक सहन किया ये सब। क्योंकि एन्डवाला (अंतवाला) है। हर एक चीज़ एन्डवाली होती है, आप में धीरज होना चाहिए। और यदि एन्ड नहीं होगा, शायद लंबे काल तक होगा, तब भी आप उसमें हेल्प नहीं कर रहे, बल्कि उसका अधिक नुकसान कर रहे हो। आप अपना खुद का तो नुकसान करते हो साथ ही सामनेवाला का भी नुकसान करते हो। उसे कौन सुधार सकता है? जो सुधरा हुआ हो, वही सुधार सके। कौन सुधार सकेगा, सेठ? हम सुधरे हुए होंगे तभी बच्चों को सुधार सकेंगे, लेकिन यहाँ हमारा ही ठिकाना नहीं है तो वहाँ क्या होगा? आपको क्या लगता है?

प्रश्नकर्ता : सुधरा हुआ कौन कहलाएगा? उसकी परिभाषा क्या है?

दादाश्री : उस व्यक्ति को यदि आप डाँटो न तो भी उसे प्रेम ही दिखेगा उसमें। आप उसे उलाहना दोगे फिर भी उसे प्रेम ही दिखेगा, कि ओ..हो..हो.. मेरे फादर का कितना प्रेम है मुझ पर!

जहाँ प्रेम है वहाँ दोष नहीं है। जहाँ व्यापारी प्रेम आया वहाँ सारे दोष दिखाई देते हैं।

सारा जगत् जो अनिवार्यता से करता है, उसमें उसे डाँटे कि, 'ऐसा क्यों कर रहे हो?' तो वह नासमझी ही है। उसे डाँटने पर वह ज़्यादा करेगा, उसे प्रेम से समझाओ। प्रेम से सभी रोग मिट जाते हैं। 'शुद्ध प्रेम' 'ज्ञानीपुरुष' से या फिर उनके 'फोलोअर्स' से मिलता है।

कठोरता में भी दिखता है ज्ञानी का प्रेम

हम डाँटें फिर भी हमें राग-द्वेष नहीं रहता, वह निश्चित है! भगवान ने राग-द्वेष के लिए आपत्ति उठाई है और सामनेवाले को दु:ख हो जाए, वह नहीं चलेगा। कुछ दु:ख हो जाए, ऐसा आपको कुछ लगा है क्या हमारे शब्दों से?

प्रश्नकर्ता : नहीं।

दादाश्री : ये सब मैं बोलता हूँ न, तो उसके लिए एक बहन क्या कहती है? 'दादाजी बोलते हैं कटु, लेकिन उसके पीछे जुनून नहीं है।' आपको समझ आया वह, कि जुनून नहीं है, ऐसा?

प्रश्नकर्ता : प्रेम है।

दादाश्री : हाँ, प्रेम है। जहाँ जुनून होता है वहाँ सुनने की ज़रूरत नहीं। जुनून तो खुला अहंकार है। हिंसकता में जुनून होता है और अहिंसकता में जुनून नहीं होता। हमारी वाणी चाहे कितनी ही कड़क (कटु) क्यों न हो, लेकिन मन को नहीं तोड़ती।

प्रश्नकर्ता : लेकिन दादाजी, जब भी आपने मुझ पर फायरिंग की है(डाँटा है), तब बल्कि प्रेम बढ़ा है। आज से पाँच साल पहले दूसरे दिन आप ने मुझ से पूछा कि, 'उसका इफेक्ट तो नहीं हुआ है न?' तब मैंने कहा था कि, 'नहीं, वैसा इफेक्ट नहीं हुआ।'

दादाश्री : नहीं होगा। इफेक्ट नहीं होता है। इसलिए मैं कहता हूँ न! यह मैं कठोरता से किसे कहता हूँ? जिसे इफेक्ट नहीं होता उसे। वर्ना बुरी दशा हो जाएगी, बिगड़ जाएगा उल्टा! यदि कठोर बोलते ही फट जाए तो मुश्किल हो जाएगी न! उस (फटे) दूध की फिर चाय नहीं बनेगी।

दादाजी का अपमान करने के बाद उनके प्रेम को देखो कि 'कैसा दिखाई देता है वह!' प्रेम कम नहीं हुआ इसलिए हमें समझ जाना है कि ये परमात्मा ही हैं। दादाजी परमात्मा नहीं है, उनका प्रेम ही परमात्मा हैं। इस दुनिया में दूसरा सबकुछ देखने को मिलेगा लेकिन ऐसा प्रेम और कहीं देखने नहीं मिलेगा।

बालक समान बनकर बरसाए प्रेम

तुझे कोई डाँटे तो खुशी होती है या कोई नहीं डाँटे तब खुशी होगी?

प्रश्नकर्ता : बहुत ज़्यादा डाँटे तो खुशी नहीं होती है।

दादाश्री : तू, आ बेटा, तू बहुत अच्छा है, बहुत समझदार है (ऐसा कहे) तो क्या खुशी होती है?

प्रश्नकर्ता : कभी-कभी होती है।

दादाश्री : हर बार नहीं होती?

प्रश्नकर्ता : जेन्यूइन्ली (सही तरीके) यदि कोई नहीं कह रहा हो तो नहीं होती। यानी चापलूसी के तौर पर यदि व्यक्ति झूठी प्रशंसा कर रहा हो तो खुशी नहीं होती, लेकिन अगर सचमुच से कहे तो अच्छा लगता है।

दादाश्री : अगर तुझे ठगने के लिए कर रहा हो तो अच्छा नहीं लगता न?

प्रश्नकर्ता : नहीं।

दादाश्री : वर्ना अच्छा लगता है। हमेशा इन मनुष्यों का स्वभाव ऐसा हैं न, बच्चों को मान देकर बुलाए कि 'आ जाओ भाई, तू तो बहुत समझदार है।' फिर उसके घर के बारे में पूछताछ करे। घर में माँ-बाप के साथ किच-किच होती हो तो वह कहे, 'भाई, क्यों तेरे फादर तो कभी भी तुझ से कहा सुनी करें, ऐसे नहीं है।' 'नहीं वह तो गुस्सा हो जाते हैं।' अर्थात् भांडा फूट जाता है सारा। पड़ौसी के यहाँ कई बच्चे भेद खोल देते हैं। और फिर पड़ौसी बल्कि उसका फायदा उठाते हैं। ऐसा अच्छा लगता है। इसलिए 'आओ भाई, लो चाय पी लो।' उसे मान चाहिए, मान में स्वाद आता है न!

अत: उन बच्चों के लिए माँ-बाप को क्या करना चाहिए? कि बाहर मान नहीं ढूँढे, उस तरह से रखना चाहिए। यदि वे मान के भूखे नहीं होंगे न तो फिर बाहर मान खाने नहीं जाएँगे, मान की होटलों में। उसके लिए क्या करना है? घर लौटे तो ऐसे कहना, 'बेटा तू तो समझदार है, ऐसा है, वैसा है,' इस प्रकार उसे थोड़ा मान दो। अर्थात् फ्रेंडशीप जैसा रखना चाहिए। उसके सिर पर हाथ फेरते हुए बैठना 'बेटा चल खाना खाने बैठें। हम नाश्ता करें साथ में।' इस प्रकार का सारा व्यवहार होना चाहिए। तब फिर बाहर प्रेम नहीं ढूँढेगा। हम तो पाँच साल का बच्चा हो तो भी उससे प्रेम करते हैं। उसके साथ फ्रेंडशिप जैसा रखते हैं।

प्रश्नकर्ता : वह देखा है। औरंगाबाद में सब बच्चों को इकट्ठा करके आप बातें किया करते थे, उनके ही दृष्टिबिंदु से 'दादाजी' भी पाँच साल के बन जाते थे।

दादाश्री : यह बेबी के साथ भी फ्रेंडशिप जैसा वातावरण। हाँ और इसके बावजूद खुद भावपूर्वक बता देते हैं सारी हकीकतें, सब कह देते हैं। क्योंकि आप लोगों में क्या रहता है कि 'मैं बड़ी उम्र का हूँ, वह छोटी उम्र का है,' ऐसा भेद पड़ जाने से वे

दरवाज़ें बंद हो जाते हैं। जबकि यहाँ दरवाज़ें खुले हैं। डेढ़ साल का बच्चा हमारे साथ खेलता भी है। 'दादाजी' के साथ, यहाँ जो भी करना हो, वह सब करता है।

प्रश्नकर्ता : विधि करते हैं!

दादाश्री : हाँ, विधि वगैरह सब, डेढ़ साल के बच्चे करते हैं, बहुत बच्चे करते हैं।

अपेक्षा रहित प्रेम, सुधारे सभी को

ये सब सुधारना हो न, तो प्रेम से सुधर सकता है । इन सबको मैं सुधारता हूँ न, वह प्रेम से सुधारता हूँ। हम प्रेम से ही कहते हैं इसलिए चीज़ बिगड़ती नहीं है और ज़रा भी द्वेष से कहा कि वह चीज़ बिगड़ जाती है। दूध में यदि दही नहीं डला हो और थोड़ी सी हवा लग जाए, तो भी उस दूध का दही बन जाता है।

अत: प्रेम से कुछ भी कहा जा सकता है। जो प्रेमवाले लोग हैं न, वे सभी कुछ कह सकते हैं। हम क्या कहना चाहते हैं? प्रेमस्वरूप बनोगे तो यह दुनिया आपकी ही है। जहाँ बैर हो, वहाँ पर बैर में से धीरे-धीरे प्रेमस्वरूप कर दो! बैर से यह दुनिया ऐसी 'रफ' (अव्यवस्थित) दिखती है। देखो न प्रेमस्वरूप से! ये सभी को किसी को ज़रा सा भी बुरा नहीं लगता और कैसा आनंद करते हैं सब!

वर्ना, इस काल में जिसे सच्चा प्रेम कहा जाता है न, वह देखने को नहीं मिलेगा। अरे, एक व्यक्ति मुझे कहता है, 'मेरा इतना प्रेम है, फिर भी वह *तरछोड़* (तिरस्कार सहित दुत्कारना) करती है।' मैंने कहा, 'नहीं है, वह प्रेम। प्रेम को *तरछोड़* कोई कर ही नहीं सकता।'

प्रश्नकर्ता : आप जिस प्रेम की बात कर रहे हैं, उसमें प्रेम की अपेक्षाएँ होती हैं क्या?

दादाश्री : अपेक्षा? प्रेम में अपेक्षा नहीं होती। जो शराब पीता है उस पर भी प्रेम रहता है और जो शराब नहीं पीता उस पर भी प्रेम रहता है। प्रेम में अपेक्षा नहीं होती। प्रेम सापेक्ष नहीं होता।

मुझ में प्रेम होगा या नहीं? या सिर्फ आप ही प्रेमवाले हो? आपने अपने प्रेम को संकुचित किया हुआ है कि 'यह वाइफ और ये बच्चे।' जबकि मेरा प्रेम विस्तारवाला है।

प्रश्नकर्ता : क्या प्रेम इतना संकुचित हो सकता है कि एक ही पात्र के तक सीमित रहे?

दादाश्री : नहीं, प्रेम यानी जो संकुचित रहे ही नहीं, वही प्रेम कहलाता है। संकुचित हुआ तब, तो वह आसक्ति हो जाएगी। यदि संकुचित रहे न कि इतने 'एरिया' (हद) तक ही तो, तो वह आसक्ति कहलाती है? संकुचित कैसा होता है? चार भाई हों और चारों के तीन-तीन बच्चें हों और जब तक वे इकट्ठे रहते हैं तब तक घर में सब 'हमारा' कहते हैं। हमारे गिलास टूट गए सब ऐसा कहते हैं। लेकिन जैसे ही चारों अलग हो जाएँ उसके दूसरे दिन से ही, जैसे यदि बुधवार के दिन अलग हुए तो गुरुवार से वे अगल ही बोलने लगेंगे 'यह आपका और यह हमारा' ऐसी संकुचितता आ जाएगी। अर्थात् पूरे घर में जो विशाल था प्रेम, वह अब जुदा होने के बाद संकुचित हो गया। फिर यदि पूरे मुहल्ले के तौर पर, युवक मंडल के तौर पर करना हो, तब फिर उनका प्रेम संयुक्त होता है। वर्ना जहाँ प्रेम है वहाँ संकुचितता नहीं होती, बल्कि विशालता होती है।

जहाँ मतभेद नहीं, वहाँ प्रेम का संपादन

हमारी ऐसी (विशालता) देखकर हमारे भागीदार (पार्टनर) का मन भी विशाल हो जाता है। संकुचित मन बड़े हो जाते हैं। भागीदार दिन-रात साथ रहे, फिर भी अंत में ऐसा ही कहते थे कि 'दादा भगवान आइए आप तो भगवान ही हो।' देखो पार्टनरों को

मुझ पर प्रेम उत्पन्न हुआ न! साथ में रहे फिर भी मतभेद नहीं पड़ा और प्रेम उत्पन्न हुआ! तब फिर कितना काम निकाल लेगा वह!

आगे की दृष्टि बंद हो जाती है, तब फिर मतभेद पड़ जाते हैं और जहाँ मतभेद हों, उसे संस्कार ही नहीं कहेंगे न! संस्कारी के यहाँ मतभेद नहीं रहते। मुझे जब आत्मज्ञान नहीं हुआ था, उस वक्त दो चार लोगों के साथ मतभेद पड़ा होगा, लेकिन 'यह' ज्ञान होने के बाद तो किसी के साथ मतभेद रहा ही नहीं। मतभेद किसलिए? यह तो खुद को जब आगे का दिखता नहीं है तब मतभेद पैदा हो जाता है? मतभेद क्यों होता है? दृष्टि आगे की बंद हो जाती है इसलिए। मतभेद का मतलब एक प्रकार का टकराव है, ऐसा आपको समझ में आया?

मैंने अपने, खुद के लिए कुछ नहीं किया। व्यापार तो अपने आप चल रहा था। हमारे पार्टनर इतना कहते थे कि, 'आप यह जो कर रहे हैं, वह कीजिए, आत्मा का।' और दो-तीन महीनों में एक बार आप काम दिखा जाना कि 'यह ऐसा है।' बस, इतना ही काम लेते थे मुझसे।

मेरा किसी के साथ मतभेद पड़ा ही नहीं है अभी तक, तो फिर मनभेद तो होगा ही नहीं न? यदि मतभेद नहीं हो तो मनभेद होगा ही नहीं। हम तो प्रेमस्वरूप! सब मेरे खुद का ही है, उस प्रेम से ही यह सबकुछ है।

ममता नहीं रहें तभी 'प्रेमस्वरूप' बन सकते हैं।

ऐसा निष्पक्षपाती प्रेमभाव नहीं देखा कहीं भी

एक भाई 'आप्तवाणी' को 'आफतवाणी' कह रहा था। आपने आफतवाणी क्यों लिखवाईं है, ऐसा कहे। अब हमने हथियार रख दिए हों और वह हथियार उठाए तो हम नीचे से उठा ही कैसे सकते हैं? यदि हम उठा लें तो अपना ही बिगड़ेंगे, उसका क्या जाएगा? वह तो खोने के लिए ही आया है। आफतवाणी जो कह रहा था न? लेकिन उसने किसकी सराहना की?

प्रश्नकर्ता : यह हमारे निष्पक्षपात की सराहना की।

दादाश्री : हाँ। 'वर्ल्ड में ऐसा कहीं नहीं देखा। सभी जगह घूमा लेकिन ऐसा कहीं नहीं देखा,' कहने लगा। फिर थोड़ा उसके मन का समाधान कर दिया, हाँ! उसके बाद दादा भगवान कौन है और यह किस प्रकार है, ऐसा सब समझाया उसे। फिर उसके मन में थोड़ा बहुत समाधान होने के बाद जब वह जाने लगा, तब मैंने कहा, 'थोड़ा दूध वगैरह पीकर जा।' कहता है 'मैं कुछ नहीं पीता।' मैंने कहा, 'हम तुझसे कह रहे हैं, थोड़ा पी ले न भाई।' तब फिर से उसने कहा 'मैं कुछ नहीं पीऊँगा।' इस पर मैंने इन सभी से कहा, 'बाँध दो इसे।' 'इसे बाँधकर पिलाओ सब।' एक ओर दूध मंगवाया और फिर उसे एक गिलास दूध पिलाया और फिर वह खुश होकर गया। वर्ना घर जाकर बैर बाँधेगा कि अब, जब दुबारा आऊँगा तब वहाँ पर जाकर बम डाल दूँगा। अगर इतना बड़ा बम रखकर चला जाए तो अपनी क्या दशा होगी? अगर उसके जाने के आधे घंटे बाद यहाँ पर फूटे तो! इस दुनिया में तो किसी को छेड़ने जैसा है ही नहीं, किसी का नाम देने जैसा नहीं है। यदि नाम दिया हो तो उसे बहला फुसलाकर कहना कि 'भाई, हमारी कुछ भूल हो गई हो तो बता दे अब!' वर्ना उसे क्या? जो नहाया ही नहीं है उसे क्या? जो नहाया है उसे झंझट होगी न? जो नहाया ही नहीं है उसका क्या बिगड़ेगा?

ऐसी है यह दुनिया! इसलिए संभलकर काम लेना चाहिए। यहाँ चुपचाप बम रखकर चला जाएगा,

वह! यानी हम सब 'अरे! क्या हुआ, 'अरे, क्या होनेवाला है?' 'वह बम रखकर चला गया।' 'आपने फोड़ा था इसलिए।' अगर उसका ज़रा सा भी मन दुखाया तो बस, हो गया! उसके बजाय अगर वह अपना दुखाकर जाए तो अपने यहाँ पर तो कोई हिसाब ही नहीं रखते उसका। हमें तो नींद आ जाएगी, लेकिन उसे भी नींद आ जाए वैसा करो। आखिर में उसे जिताकर भेजो।

फिर भी अंत में इतना तो कबूल किया कि 'सब जगह घूमा हूँ दादाजी, लेकिन ऐसा निष्पक्षपात नहीं देखा है मैंने।' कहता है, 'ऐसा प्रेम भाव नहीं देखा है।'

ज्ञानी का प्रेम सभी पर एक सरीखा

यह प्रेम तो ईश्वरीय प्रेम है। ऐसा सभी जगह पर नहीं होता न! यह तो किसी जगह पर ऐसा हो तभी हो सकता है, नहीं तो होगा नहीं न!

अभी तो जो शरीर से मोटा दिखे उस पर भी प्रेम, गोरा दिखे उस पर भी प्रेम, काला दिखे उस पर भी प्रेम, लूला-लंगड़ा दिखे उस पर भी प्रेम, अच्छे अंगोंवाला आदमी दिखे उस पर भी प्रेम। सभी जगह सरीखा प्रेम दिखता है। क्योंकि उनके आत्मा को ही देखते हैं। और कोई चीज़ नहीं देखते। जैसे इस संसार में लोग मनुष्य के कपड़े नहीं देखते, उसके गुण कैसे हैं वही देखते हैं, उसी तरह 'ज्ञानीपुरुष' इस पुद्गल को नहीं देखते। पुद्गल तो किसी का अधिक होता है किसी का कम होता है, कोई ठिकाना ही नहीं न!

और ऐसा प्रेम हो वहाँ पर तो बच्चे भी बैठे रहते हैं, अनपढ़ बैठे रहते हैं, पढ़े-लिखे बैठे रहते हैं, बुद्धिशाली बैठे रहते हैं, सभी लोग समा जाते हैं। बच्चे तो उठते ही नहीं, क्योंकि वातावरण इतना अधिक सुंदर होता है।

लघुतम भाव से प्रेमावतार

प्रश्नकर्ता : कईबार ऐसा होता है कि सोए हुए हों और फिर जागृत हो या अर्धजागृत अवस्था हो और 'दादा' अंदर बिराजमान हो जाते हैं। 'दादा' का शुरू हो जाता है! वह क्या है?

दादाश्री : हाँ, शुरू हो जाता है। ऐसा है न, 'दादा' सूक्ष्म भाव से पूरी दुनिया में घूमते रहते हैं। मैं स्थूल भाव से यहाँ हूँ और दादा सूक्ष्मभाव से पूरे वर्ल्ड में घूमते रहते हैं, सब जगह ध्यान रखते हैं।

प्रश्नकर्ता : दादाजी, चौबीसों घंटे रहते हैं।

दादाश्री : चौबीसों घंटे। इसलिए कई लोगों को अपने आप सपने में वह सब आता ही रहता हैं पूरे दिन। कितनों के साथ तो (दादा) दिन में भी बातचीत करते हैं। वह कहता भी है, कि मेरे साथ इस प्रकार बातचीत कर गए हैं, दिन में खुली आँखों से। वह ऐसा कहा करता है। दादाजी बोलते हैं और वह सुनता है और फिर लिख लेता है वापस। वह लिख लेता है कि आठ बजे इतना, इतना कहा था, वह सारा ऐसा होता रहता है। इसके बावजूद इसमें कोई चमत्कार नहीं है।

प्रश्नकर्ता : उसे जो ऐसा है तो, क्या उसे आत्म से संबंधित छाप (असर) पड़ गई है, ऐसा कहेंगे?

दादाश्री : नहीं ऐसा कुछ नहीं है। यह चमत्कार नहीं है, यह स्वाभाविक है। किसी भी इंसान की जब आवरण रहित स्थिति हो जाए और कुछ थोड़ा सा केवलज्ञान में बाधा डाले उतना आवरण रहा हो और जगत् में जिसका कोई सानी न हो ऐसा प्रेम उत्पन्न हो चुका हो, प्रेमावतार हो चुके हों, प्रेमावतार...।

ये (दादा) प्रेमावतार हैं। इसलिए जहाँ मन में

थोड़ी सी भी कुछ उलझन हुई नहीं कि वहाँ हाज़िर हो जाते हैं और लघुतम भाव से हैं। वह लघुतम भाव इसीलिए है कि किसी का प्रमाण, किसी के धर्म के प्रमाण को नहीं दुभाते। वह किसी भी प्रकार से उसमें रूकावट नहीं डालते, बल्कि यदि वे पूछें तो उन्हें हेल्प करे। उसकी बात नहीं काटते।

प्रश्नकर्ता : खंडन की बात ही नहीं।

दादाश्री : खंडन की तो बात होती ही नहीं। लेकिन उसे थोड़ा सा भी दु:ख हो, ऐसा भाव भी नहीं होता। क्योंकि निष्पक्षपाती हैं।

प्रेमस्वरूप कराए जगत् विस्मृत

हीरा बा तिहत्तर साल के हैं, फिर भी मुझ से कहती हैं, 'आप जल्दी आना।' मैंने कहा, 'मुझे भी आपके बगैर अच्छा नहीं लगता!' लेकिन यह सब हमारा ड्रामा ही होता है। ऐसा ड्रामा करने से उन्हें कितना आनंद हो जाता है! 'जल्दी आना, जल्दी आना' कहती हैं। उन्हें भाव है इसीलिए वे कहते हैं न? हम भी ऐसा बोलते हैं। बोलना हितकारी होना चाहिए। कहा हुआ शब्द यदि सामनेवाले के लिए हितकारी नहीं हो, तो अपना कहा हुआ काम का ही क्या?

प्रेम तो, बीवी-बच्चों पर ही रहता है न, अभी तो? वहाँ से प्रेम कब निकाल दोगे? मैंने तो कितने ही सालों से निकाल दिया है।

प्रश्नकर्ता : मेरी पत्नी भी यहाँ आई हैं।

दादाश्री : घबराइए नहीं, उस तरह का निकाल देने के लिए नहीं कह रहा हूँ। आपके मन में ऐसा होता होगा कि 'ये प्रेम निकाल लेंगे तो?' नहीं मैं संसार तोड़ने नहीं आया हूँ। संसार तो आदर्श होना चाहिए। मेरा जीवन भी आदर्श है न! अभी तो हीरा बा हैं मेरे घर पर, वाइफ हैं, तिहत्तर वर्ष की। लेकिन हमारा जीवन आदर्श हैं। आपको तो कभी-कभी गड़बड़ हो जाती होगी न? मतभेद पड़ जाता है न?

मैं प्रेमस्वरूप हो गया हूँ। उस प्रेम में ही आप मस्त हो जाओगे तो जगत् को भूल ही जाओगे, जगत् विस्मृत होता जाएगा। प्रेम में मस्त होने से आपका संसार बहुत सुंदर चलेगा बाद में, आदर्श चलेगा।

लागणी रखें तो रहे अभेदता

हमारी *लागणी* कैसी होती है? एकदम होकर अस्त हो जाए, ऐसी नहीं होती। हमारी *लागणी* परमानेन्ट होती है। (औरों में तो) पैदा होकर एकदम अस्त हो जाती है। लोग नहीं कहते कि मेरा लड़का फर्स्ट क्लास है। ऐसी सब बड़ी-बड़ी बातें करते हैं और घंटेभर बाद अगर उस लड़के के हाथ से बीस कप-प्लेट गिर जाएँ और टूट जाएँ, तब उसके फादर कहेंगे कि 'यूज़लेस फेलो (व्यर्थ इंसान)।' इस प्रकार अभिप्राय देनेवाला वही व्यक्ति, सौ-सौ बार अभिप्राय बदलता है। तब लड़का क्या कहता है कि 'पापा जी, अब मुझे आपका सर्टिफिकेट नहीं चाहिए। मेरे कॉलेज ने जो सर्टफिकेट दिया है, वह हमेशा के लिए है। कॉलेज का दिया हुआ हमेशा के लिए होता है न? और माँ-बाप का सर्टिफिकेट तो क्षणभर में ऐसे बदल जाए, क्षणभर में वैसे...!

अत: ये जो *लागणी* है, वह झूठी *लागणी* है। यूज़लेस (व्यर्थ) *लागणी*। और सर्टिफिकेट नहीं देते हैं हम। हीरा बा के लिए हमेशा *लागणी*वाले। कोई कहेगा कि 'आप ज्ञानी हो इसके बावजूद स्त्री (पत्नी) से *लागणी* रखते हो? लेकिन हमेशा के लिए परमानेन्ट *लागणी*।' लेकिन क्षणभर में ऐसे बढ़ जाए और घट जाए, घट जाए और बढ़ जाए ऐसा नहीं होता। हमारा गुरु-लघु नहीं होता। वह गलत (उल्टा) करे फिर भी प्रेम वही का वही रहता है। क्योंकि बुद्धि भांजगड़ करती है और उल्टा करती है। तो क्या यह समझ में आया कि बुद्धि परेशान करती है? हम में बुद्धि

नहीं है न! इसलिए आप उल्टा करो फिर भी प्रेम और सीधा करो फिर भी प्रेम।

प्रश्नकर्ता : और वे *लागणी* जो इस प्रकार कम-ज़्यादा होती रहती हैं, वे सारी आसक्ति कहलाती हैं?

दादाश्री : हाँ, जो कम-ज़्यादा होता रहे वह सब आसक्ति है, वह *लागणी* नहीं है।

जिस पर हमें प्रेमवाली *लागणी* होती है, वह हमेशा के लिए होनी चाहिए। बार-बार बदलती रहे, उसे *लागणी* कैसे कहेंगे? संयोगानुसार वह स्वार्थी कहलाता है। स्वार्थ नहीं होना चाहिए। हमें आपसे क्या स्वार्थ है? हमें *लागणी* होती है, परमानेन्ट *लागणी*।

प्रश्नकर्ता : और आपकी परमानेन्ट *लागणी* है, इसी वजह से हमें अभेदता लगती है दादा।

दादाश्री : हाँ, अभेदता लगती है। और यदि अभेदता लगे तो आपका कल्याण हो जाता है। भेद लगे तो कल्याण नहीं होगा।

चिंता नहीं छूती ज्ञानी को

हमें ये सभी कहते हैं कि, 'दादा, आप हमारे लिए बहुत चिंता रखते हैं, हैं न!' वह ठीक है, लेकिन उन्हें पता नहीं कि दादा चिंता को छूने ही नहीं देते। क्योंकि चिंता रखनेवाला इंसान कुछ भी नहीं कर सकता, निर्वीर्य हो जाता है। चिंता नहीं रखते, तो सब कर सकते हैं। चिंता रखनेवाला इंसान तो खत्म हो जाता है। इसलिए ये सब जो कहते हैं, वह बात सही है। हम सुपरफ्लुअस सभी कुछ करते हैं, लेकिन हम छूने नहीं देते।

प्रश्नकर्ता : तो ऐसे असल में कुछ भी नहीं करते? कोई महात्मा दु:ख में आ जाए तो कुछ भी नहीं करते?

दादाश्री : करते हैं न! लेकिन वह सुपरफ्लुअस, अंदर छूने नहीं देते। बाहर के भाग का पूरा कर लेते हैं। बाहर के भाग में सारे ही प्रयोग पूरे होने देते हैं, लेकिन सिर्फ चिंता ही नहीं करनी है। चिंता से तो सब बिगड़ता है उल्टा। आप क्या कहते हो? चिंता करने को कहते हो मुझे?

छूने दें तो वह काम ही नहीं हो पाए। पूरी ही दुनिया को छूता है, अंदर छूता है इसीलिए तो दुनिया का काम नहीं होता। हम छूने नहीं देते इसलिए तो काम होता है। छूने नहीं देते इसीलिए हमारी सेफसाइड और उसकी भी सेफसाइड। आपको पसंद आया, इस प्रकार छूने न दे ऐसा? आपने तो छूने दिया था न, है न?

हमने तो हिसाब देख लिया कि हम छूने दें तो यहाँ निर्वीर्य हो जाएगा और उसका काम नहीं हो पाएगा, और अगर नहीं छूने दें, तो आत्मवीर्य प्रकट होता है और उसका काम हो जाता है।

ओहोहो! ऐसा लघुतम पद

प्रश्नकर्ता : दादा, आप किस तरह अनासक्त हुए?

दादाश्री : सब अपने आप, बट नैचुरल प्रकट हो गया। यह मुझे कुछ पता नहीं चलता कि किस तरह हुआ यह!

प्रश्नकर्ता : लेकिन अब तो आपको पता चलता है न? वे सोपान हमें बताइए।

दादाश्री : मैं कुछ भी करने नहीं गया, कुछ हुआ नहीं। मैं करने क्या गया और हो क्या गया? मैं तो इतनी सी खीर बनाने गया था, दूध में चावल डालकर, लेकिन यह तो अमृत बन गया! वह पूर्व का सामान सारा इकट्ठा था। मुझे ऐसा ज़रूर था कि अंदर अपने पास कुछ है, इतना ज़रूर पता था।

प्रश्नकर्ता : यानी अनासक्त आप जिस तरीके से हुए तो मुझे ऐसा हुआ कि आप उस

तरीके का वर्णन करेंगे, तो वह तरीका मुझे समझ में आएगा।

दादाश्री : ऐसा है, यह 'ज्ञान' लिया और हमारी आज्ञा में रहे, तो वह अनासक्त कहलाता है। फिर भले ही वह खाता-पीता हो या काला कोट पहनता हो या सफेद कोट-पेन्ट पहनता हो या चाहे जो पहनता हो, लेकिन वह हमारी आज्ञा में रहा तो वह अनासक्त कहलाएगा। यह आज्ञा अनासक्त का ही प्रोटेक्शन है।

'आपका' है और आपको दिया है

बाकी, 'आप' अनासक्त हो ही। अनासक्ति कोई मैंने आपको दी नहीं है। अनासक्त 'आपका' स्वभाव ही है और आप दादा का उपकार मानते हो कि दादा ने अनासक्ति दी है। ना, ना, मेरा उपकार मानने की ज़रूरत नहीं है और 'मैं उपकार करता हूँ' ऐसा मानूँगा तो मेरा प्रेम खत्म होता जाएगा। मुझसे 'मैं उपकार करता हूँ' ऐसा नहीं माना जा सकता। इसलिए खुद, खुद की पूरी समझ में रहना पड़ता है, संपूर्ण जागृति में रहना पड़ता है।

यानी अनासक्त आपका खुद का स्वभाव है। आपको कैसा लगता है? मैंने दिया है या आपका खुद का स्वभाव ही है?

प्रश्नकर्ता : खुद का स्वभाव ही है न!

दादाश्री : हाँ, ऐसा बोलो न ज़रा। यह तो सभी 'दादा ने दिया, दादा ने दिया' कहो तो कब पार आएगा?

प्रश्नकर्ता : लेकिन उसका भान तो आपने ही करवाया न?

दादाश्री : हाँ, लेकिन भान करवाया, उतना ही! बाकी 'सब मैंने दिया है' ऐसा कहते हो लेकिन वह आपका ही है और आपको दिया है।

प्रेम यानी लगन लगना

प्रश्नकर्ता : हर एक मनुष्य का ध्येय यही है न? मेरा प्रश्न यहीं पर है कि ईश्वर का प्रेम संपादन करें किस तरह?

दादाश्री : प्रेम तो यहाँ सभी लोगों को करना होता है, लेकिन मीठा लगे तो करे न? उस तरह से ईश्वर कहीं भी मीठा लगा हो, तो वह मुझे दिखाओ न!

प्रश्नकर्ता : ईश्वर में रुचि तो होती है, फिर भी कुछ आवरण ऐसे बन जाते हैं, इसलिए ईश्वर का नाम नहीं ले पाते होंगे।

दादाश्री : लेकिन ईश्वर पर प्रेम आए बगैर किसका नाम लें वे? ईश्वर पर प्रेम आना चाहिए न? और ईश्वर को बहुत प्रेम करें तो उससे क्या फायदा? मेरा कहना है कि यह आम होता है, वह मीठा लगे तो प्रेम होता है और कड़वा लगे या खट्टा लगे तो? वैसे ही ईश्वर कहाँ पर मीठा लगा, कि आपको प्रेम हो?

ऐसा है, जीव मात्र के अंदर भगवान बैठे हुए हैं, वे चेतनरूप में है, कि जो चेतन जगत् के लक्ष्य में है ही नहीं। और जो चेतन नहीं है, उसे चेतन मानते हैं। इस शरीर में जो भाग चेतन नहीं है, उसे चेतन मानते हैं और जो चेतन है, वह उसके लक्ष्य में है ही नहीं, भान में है ही नहीं। अब वह शुद्ध चेतन मतलब शुद्धात्मा और वही परमेश्वर है। उसका नाम कब याद आएगा? कि जब हमें उसकी तरफ से कुछ लाभ हो न तभी उन पर प्रेम आता है। जिन पर प्रेम आए न, वे हमें याद आते हैं तो उनका नाम ले सकते हैं। इसलिए प्रेम आए ऐसे हमें मिलें, तब वे हमें याद रहा करते हैं। आपको 'दादा' याद आते हैं?

प्रश्नकर्ता : हाँ।

दादाश्री : उन्हें प्रेम है आप पर, इसलिए याद आते हैं। अब प्रेम क्यों आया? क्योंकि 'दादा' ने कोई सुख दिया है कि जिससे प्रेम उत्पन्न हुआ, और वह प्रेम उत्पन्न हो तब फिर भूला ही नहीं सकता न! उसे याद करना ही नहीं होता। प्रेम यानी लगन लगना वह। और वह पूरे दिन याद आता रहता है।

शब्दों पर का प्रेम वह स्थूल प्रेम

फिर भी हमें चाहने की ज़रूरत नहीं है और अन्य किसी को भी चाहने करने की ज़रूरत नहीं है। ये चाह रखी इसलिए तो आज्ञा का पालन नहीं होता है न! मेरे पर भी चाह नहीं होनी चाहिए और अन्य किसी पर भी नहीं होनी चाहिए। चाहने से आज्ञा गायब हो जाती है। ये तो संतों के प्रति चाह रखेंगे लेकिन क्या फिर पत्नी के प्रति नहीं? उसकी भी ज़रूरत नहीं है। वह चाह किसलिए? और फिर मेरे शब्दों पर चाह, उसका अर्थ ही क्या है?

प्रश्नकर्ता : शब्दों के अंदरूनी अर्थ के लिए?

दादाश्री : नहीं उसमें अर्थ है ही नहीं। यह तो खुद मान लेते हैं उतना ही। हमें उन शब्दों पर राग है और उस राग की वजह इन सभी आज्ञाओं का पालन नहीं हो पाता। इसलिए इन सभी शब्दों का राग छोड़ देना। फिर भले ही वे दादा के शब्द हों या चाहे किसी के भी शब्द हों, कोई फायदा नहीं। इन शब्दों पर जो प्रेम है, वह तो स्थूल प्रेम है, जो व्यर्थ है, आसक्तिवाला है। जब तक उस आसक्ति को नहीं छोड़ेंगे, तब तक मूल ज्ञान को टच नहीं होने देगा। अत: वह किस काम का? दादाजी के शब्द हों या चाहे किसी के शब्द हों, वह किस काम के?

प्रश्नकर्ता : जो प्रेरणा स्त्रोत हैं, जहाँ से शब्द आते हों, उनकी कीमत है शब्दों की कीमत नहीं है।

दादाश्री : शब्द सिर्फ टेपरिकॉर्ड ही हैं। कहीं से भी नहीं आते हैं कि उनकी तारिफ करते रहने का, उसका क्या मतलब है? इसलिए जब यह सारा शब्द मोह चला जाए न तब कहीं जाकर काम बने। शब्द मोह व्यक्ति पर मोह करवाता है, पक्षपाती बनाता है और जहाँ पक्षपात हो वहाँ काम नहीं बनता। इसलिए दादा पर के मोह के लिए भी, मैंने मना किया है। इस देह पर मोह नहीं रखना है।

परम विनय और प्रेम, और कुछ ज़रूरी नहीं

यह 'दादा' तो ऐसा निकला है कि जो किसी से भी खरीदा जा सके ऐसा नहीं है। केवल परम विनय से ही खरीदा जा सकता है। विनय और प्रेम किसी से दुत्कारे नहीं जा सकते।

प्रश्नकर्ता : जब आपको देखते हैं तब लगता है कि 'दादा आप ऐसे हैं।' आपमें कितना प्रेम भरा हुआ है! फिर तीर्थंकरों की तो बात ही क्या? महाविदेह क्षेत्र में तो इससे भी कितना ज़्यादा होगा?

दादाश्री : वह प्रेम ऐसा नहीं होता। यह तो युक्तिवाला प्रेम जबकि वह युक्तिवाला प्रेम नहीं होता है।

प्रश्नकर्ता : आप जिस तरह सीमंधर स्वामी के साथ व्यवहार रखते हैं वह हमें नहीं देखना है लेकिन, हम दादाजी से कैसा व्यवहार रखें कि महाविदेह पहुँच जाएँ?

दादाश्री : यह जो रखते हो, वही व्यवहार है, ऐसा प्रेम और परमविनय यही बस। और किसी चीज़ की ज़रूरत नहीं है।

प्रश्नकर्ता : तो फिर एक प्रश्न वह रहा न कि दादाजी कहें कि बैठ तो बैठ जाना है और कहें कि खड़ा हो तो खड़े हो जाना है, क्या यह ठीक है?

दादाश्री : हाँ, वैसा ही, बस, बस। हाँ, कभी

कभार ऐसा भी कहें, कि आओ हमारे पास बैठो। ऐसा कहे तब आपको पूछना है कि 'नीचे बैठूँ या यहाँ बैठूँ।' वापस पूछना। क्योंकि उसमें उनका असल स्वभाव निकलेगा व्यवहार का। इसलिए आपको दुबारा पूछना चाहिए कि 'आप कहें तो ऊपर बैठूँ, वर्ना नीचे बैठूँ।' तब कहे, 'नीचे बैठो,' वर्ना अगर कहे, कि ऊपर बैठो तो ऊपर भी बैठना पड़े।

ज्ञानी के शब्द को हिलाना (फेरफार, बदलना) नहीं। बहुत बड़ा ज़ोखिम है! हाँ, वह एक ही शब्द मोक्ष में ले जाए। एक भी शब्द यदि भीतर घुस गया और पच गया तो मोक्ष में ले जाएगा।

प्रेम, तो ज्ञानीपुरुष से लेकर ठेठ भगवान तक में होता है, उन लोगों के पास प्रेम का लाइसेन्स होता हैं। वे प्रेम से ही लोगों को सुखी कर देते हैं। वे प्रेम से ही बाँधते हैं वापस, छूट नहीं सकते। वह ज्ञानीपुरुष से ठेठ तीर्थंकर तक सभी प्रेमवाले, अलौकिक प्रेम!

जहाँ बुद्धि नहीं वहाँ अभेद प्रेम

प्रश्नकर्ता : तो हमें हृदय में प्रेम किस तरह लाना चाहिए?

दादाश्री : हृदय होता ही है मनुष्य में, अगर बुद्धि नहीं बढ़ाए और बुद्धि के ऊपर एकांगी न हो जाए तो।

प्रश्नकर्ता : हृदय यानी क्या कहना चाहते हैं?

दादाश्री : हृदय, बुद्धि के साथ ही चलना चाहिए। यदि बुद्धि एकदम से आगे बढ़ जाए तो हृदय बंद पड़ जाएगा। हृदय यानी शुद्ध प्रेमपूर्वक का मार्ग है। वे (जिसकी बुद्धि निर्मल हो गई हों) सभी हृदयमार्गी होते हैं इसलिए शुद्ध प्रेम अंदर साथ में ही रहता है।

हमारा निरंतर प्रेम होता है न वह सब जगह एक सा, समान प्रेम होता है। हमारे प्रेम में भेद नहीं पड़ता और जहाँ अभेद प्रेम है वहाँ फिर बुद्धि चली जाती है। हमेशा प्रेम पहले बुद्धि को तोड़ डालता है या फिर बुद्धि प्रेम को आसक्त बनाती है। अत: जहाँ बुद्धि हो वहाँ प्रेम नहीं होता और प्रेम हो वहाँ बुद्धि नहीं होती। अभेद प्रेम उत्पन्न हों कि बुद्धि खत्म हुई यानी अहंकार खत्म हुआ। फिर कुछ रहा नहीं और ममता नहीं हो, तब ही प्रेमस्वरूप हो जाएगा। हम तो अखंड प्रेमवाले!

भेद न डाले, वही प्रेम कहलाता है। भेद नहीं डालना, वही प्रेम कहलाता। अभेदता हुई, वही प्रेम। वह प्रेम नोर्मेलिटी कहलाती है। भेद हो तब अच्छा काम कर आए न, तो खुश हो जाता है। और वापस थोड़ी देर बाद उल्टा काम (हो जाए), चाय के प्याले गिर जाएँ तो चिढ़ जाता है, यानी अबव नॉर्मल, बिलो नॉर्मल होता रहता है। वह (प्रेमवाला) काम को नहीं देखता है, मूल स्वभाव के दर्शन करता है। काम तो, हमें नोर्मेलिटी में प्रोब्लम न हों, वैसे ही काम होते हैं।

प्रेमरूपी हथियार से जगत् सयाना बनता है

प्रश्नकर्ता : हमें आपके प्रति जो भाव जागृत होता है वह क्या है?

दादाश्री : वह तो हमारा प्रेम आपको पकड़ता है। सच्चा प्रेम सारे जगत् को पकड़ सकता है। प्रेम कहाँ-कहाँ होता है? प्रेम वहाँ होता है कि जहाँ अभेदता होती है। यानी जगत् के साथ अभेदता कब कहलाएगी? कि प्रेमस्वरूप हो जाए तो। सारे जगत् के साथ अभेदता कहलाती है। तब वहाँ पर और कुछ नहीं दिखता, प्रेम के अलावा। असल में जगत् जैसा है उसे वैसा ही वह जाने, फिर अनुभव करे तो उसके लिए प्रेमस्वरूप ही रहेगा। जगत् 'जैसा है वैसा' क्या है कि कोई जीव किंचित्मात्र भी दोषित नहीं है, निर्दोष ही है जीव मात्र। कोई जीव दोषित दिखता है तो वह भ्रांति से ही दिखता है।

प्रश्नकर्ता : हाँ, समझ में आया। यानी हममें जागृत होनेवाला भाव, वह आपके हृदय के प्रेम का ही परिणाम है, ऐसा है?

दादाश्री : हाँ, प्रेम का ही परिणाम है। यानी प्रेम के हथियार से ही समझदार हो जाते हैं। मुझे डाँटना नहीं पड़ता।

मनुष्य तो अगर सुंदर हों, फिर भी अहंकार से बदसूरत दिखते हैं। सुंदर कब दिखते हैं? प्रेमात्मा हो जाए तब। तब तो बदसूरत भी सुंदर दिखता है। शुद्ध प्रेम प्रकट हो जाए तभी सुंदर दिखने लगता है। जगत् के लोगों को क्या चाहिए? मुक्त प्रेम, जिसमें स्वार्थ की गंध या किसी भी प्रकार का मतलब नहीं होता।

यह तो कुदरत का लॉ है। नैचुरल लॉ! क्योंकि प्रेम, वह खुद ही परमात्मा है।

ज्ञानी की निश्रा में प्रेम उमड़ता है

प्रश्नकर्ता : इस ज्ञान के बाद हमें जो अनुभव होता है, उसमें कुछ प्रेम-प्रेम-प्रेम छलकता है, वह क्या है?

दादाश्री : वह प्रशस्त राग है। जिस राग से संसार के सारे राग छूट जाते हैं। जब ऐसा राग उत्पन्न हो तब संसार में जो भी दूसरे राग सभी जगह लगे हुए हों, वे सब वापस आ जाते हैं। इसे प्रशस्त राग कहा है भगवान ने। प्रशस्त राग, वह प्रत्यक्ष मोक्ष का कारण है। वह राग बाँधता नहीं है। क्योंकि उस राग में संसारी हेतु नहीं है। उपकारी के प्रति जो राग उत्पन्न होता है, वह प्रशस्त राग है। वह बाकी सभी रागों से छुड़वा देता हैं।

इन 'दादा' का निदिध्यासन करें न तो उनमें जो गुण हैं न, वे उत्पन्न होते हैं अपने में। दूसरा यह कि जगत् की किसी भी चीज़ की स्पृहा नहीं करनी है। भौतिक चीज़ की स्पृहा नहीं करनी है। आत्मसुख की ही वाँछना, दूसरी किसी चीज़ की वाँछना ही नहीं और कोई हमें गालियाँ दे जाए तो, उसके प्रति भी प्रेम! इतना हो जाए तो फिर काम हो जाएगा।

आपकी वृत्ति (मनोभाव) बता देती है आपका प्रेम

प्रश्नकर्ता : दादाजी, शास्त्र ऐसा कहते हैं कि ज्ञानीपुरुष पर प्रेम रखना चाहिए। अब ज्ञानीपुरुष पर वास्तव में प्रेम हैं, वह कैसे पता चलेगा? ऐसा कुछ थर्मामीटर है क्या? क्योंकि वैसे तो इस रीति-रिवाज़वाले जगत् में कुछ पता ही नहीं चलता।

दादाश्री : पता चल सकता है। हमारी वृत्तियाँ ही हमें बता देंगी न! सगे-संबंधी, इसमें से कौन सा रिश्तेदार अधिक प्रिय है ऐसा पता चलता है, प्रेम है, भाव है उसका पता चलता है तो क्या इसका पता नहीं चलेगा? सब पता चलता है। आत्मा थर्मामीटर जैसा है। जिसमें रखा जाए, उसके मार्क बताएगा कि इतनी डिग्री हुई!

प्रश्नकर्ता : ज्ञानीपुरुष के प्रति प्रेम हो तो, उसके लक्षण कैसे होते हैं?

दादाश्री : लक्षण तो ठीक है, लेकिन खुद को यह पता चलता है कि मुझे उनके प्रति ज़्यादा है, यद्यपि ज़्यादात्तर सबको प्रेम तो होता ही हैं, लेकिन किसी-किसी को कम-ज़्यादा हो सकता है। अब ज्ञानीपुरुष को कहीं प्रेम की ज़रूरत नहीं हैं। आप उनको राज़ी रखो न, तो बहुत हो गया बस। और जो कभी कम न हो ऐसा प्रेम हो, वही प्रेम है। तेरा प्रेम कम हो जाता है या नहीं होता?

प्रश्नकर्ता : हाँ, कम हो जाता है, चंदू का। चंदू में परिवर्तन होता रहता है।

दादाश्री : फिर वह प्रेम नहीं कहलाता न?

प्रश्नकर्ता : नहीं, लेकिन आपके प्रति प्रेम कभी भी कम होता हुआ नहीं दिखता, तब यहाँ वह

प्रेम आपके तरफ का टिका है, अर्थात् स्थिर रहता है उस अनुसार। यानी जब सामनेवाले का रिस्पोन्स मिलता है। इसलिए जब तक अन्य व्यक्तियों में ऐसा परिवर्तन होनेवाला दिखता रहे, तब तक यहाँ भी परिवर्तन होता रहता है, ऐसा हो सकता है न?

दादाश्री : नहीं, उसे देखना आए नहीं न! यह बहुत मुश्किल है। हमारा (प्रेम) घटता-बढ़ता नहीं हैं।

प्रश्नकर्ता : नहीं, वह तो दूसरे की बात कर रहा है।

दादाश्री : नहीं, ऐसा नहीं। वह दूसरे के बारे में बात करें, लेकिन ये हमारा (प्रेम) कम-ज़्यादा नहीं होता, ऐसा आपको पता चल जाता है, जब से आप मिले तब से?

प्रश्नकर्ता : पता तो चलेगा ही न, दादाजी।

दादाश्री : आपको पता चल जाता है कि हमारा वही का वही प्रेम दिख रहा है।

प्रश्नकर्ता : हाँ, सही है दादाजी।

दादाश्री : हँसी-मज़ाक करें, चाहे कुछ भी करें, लेकिन इसके बावजूद प्रेम तो जैसा था वैसे का वैसा ही है, ऐसा दिखता है। डाँट भी देते हैं, लेकिन फिर भी प्रेम वहीं के वहीं, उसी जगह पर रहता है। डाँटना करना वह अलग चीज़ है। और ऐसा प्रेम, जो घटे-बढ़े नहीं न, वही परमात्मा है। बस, और कुछ नहीं।

राग में भी वीतराग, ज्ञानी

यानी जब हम नीरू बहन से कहते हैं, उस समय उन पर से *राजीपा* (गुरुजनों की सेवा और प्रसन्नता) चला नहीं जाता हमारा। दूसरों को गलत समझ में आता है, क्योंकि उनके पास देखने की दृष्टि सही नहीं है।

नीरू माँ : आप कहते हैं न कि हम नाराज़ हो गए। हमें नाराज़ किया तो आप....

दादाश्री : यानी ऐसा तो इन्हें कहा वह। आपके (नीरू माँ) के लिए नहीं।

ऐसा है, अन्य किसी को जब हम डाँटते हैं और फिर हम खुशी से उसके साथ बात करते हैं लेकिन अंदर से कम हो जाता है। उसे ऐसा लगता है कि मुझ पर दादाजी खुश हैं। कितने समभावी हैं। आप (नीरू माँ) पर समभाव नहीं रखते। यदि वैसा रखें तो फिर आप पर जो *राजीपा* है वह कम हो गया ऐसा कहलाएगा।

नीरू माँ : वह तो समझ में आता है, दादाजी।

दादाश्री : दूसरों के प्रति संपूर्ण वीतराग रहते हैं। आप (नीरू माँ) के प्रति संपूर्ण वीतराग नहीं रहते। दूसरों से वीतराग होना यानी फिर वहाँ उनके प्रति हमारा प्रेम घटता गया और वीतराग होते गए। प्रेम कम हो गया और वीतराग होते गए जबकि आपको डाँटते हैं, इसका मतलब आप पर हमारा प्रेम हैं। आपके प्रति वीतराग नहीं हुए हैं। वीतराग आपके प्रति नहीं हुए हैं, इतना ही बस। आपकी समझ में आता है न?

नीरू माँ : हाँ।

दादाश्री : और अभी आगे बढ़ते हैं। अभी समझ में नहीं आए तो फिर बाद में आगे समझ में आ जाएगा।

संपूर्ण वीतरागता, वही प्रेम

प्रश्नकर्ता : दादाजी, कुछ इस प्रकार बात निकली थी कि वीतरागों में दर्शन होता है, प्रेम नहीं होता। इसलिए आप खटपटिया वीतराग हैं। जब आप प्रेमस्वरूप हो गए तब संपूर्ण वीतरागता उत्पन्न नहीं हुई। वह ज़रा समझना था। अर्थात् प्रेमस्वरूप और संपूर्ण वीतरागता, ये दोनों एक ही हैं क्या?

दादाश्री : संपूर्ण वीतरागता में प्रेम ही होता है। प्रेम मतलब क्या? किसी की तरफ सहज भी भाव नहीं बिगड़े, वही प्रेम कहलाता है। संपूर्ण वीतरागता, वही प्रेम कहलाता है।

प्रश्नकर्ता : किसी के भी दोष नहीं दिखते?

दादाश्री : दोष की तो बात ही कहाँ रही, वह तो समझे कि नहीं दिखते हैं, लेकिन वह तो सामनेवाला उल्टा करे तब भी किंचित् मात्र भी प्रेम कम नहीं हों।

प्रेमस्वरूप अर्थात् जब वीतरागता होगी, तब प्रेमस्वरूप होगा। जितनी वीतरागता उतना प्रेमस्वरूप हुआ।

प्रश्नकर्ता: नहीं, यानी वहीं पर दो बातें इस प्रकार थीं, अलग थीं। अर्थात् वीतरागों का, दर्शन कहलाता है, जबकि हमारा प्रेम कहलाता है ऐसा। वीतरागता नहीं कहलाती हमारी।

दादाश्री : हाँ, वीतरागता मतलब यह हमारा प्रेम है, तो ऐसे प्रेम दिखता है और इन वीतरागों का प्रेम ऐसे दिखता नहीं है। लेकिन सच्चा प्रेम तो उन्हीं का कहलाता है और हमारा प्रेम दिखाई देता है। लेकिन वह सच्चा प्रेम नहीं कहलाता। एक्ज़ेक्टली जिसे प्रेम कहा जाता है न, वह नहीं कहलाता। एक्ज़ेक्टली तो (वहाँ) संपूर्ण वीतरागता हो जाए, तब सच्चा प्रेम और हमारा तो चौदस कहलाता है, अभी पूनम नहीं है!

प्रश्नकर्ता : यानी पूनमवाले में इससे भी अधिक प्रेम होता है?

दादाश्री : वही सच्चा प्रेम है! इन चौदसवाले में किसी जगह पर कमी भी रह सकती है। इसलिए पूनमवाले का ही प्रेम सच्चा होता है।

प्रश्नकर्ता : दादा संपूर्ण वीतराग हो लेकिन प्रेम न हो, ऐसा तो हो ही नहीं सकता न?

दादाश्री : प्रेम रहित हो ही नहीं सकता न!

द्वेष निर्मूल होने से उपजे शुद्ध प्रेम

प्रश्नकर्ता : अर्थात् प्रेम को उस अपेक्षा से कहा होगा कि द्वेष का अभाव होना?

दादाश्री : द्वेष का अभाव तो आपको भी हो चुका होता है। जब हम ज्ञान देते हैं न तब से द्वेष का अभाव हो जाता है, वह वीतद्वेष बन जाता है। फिर बाद में वीतराग बनना शेष रहा।

प्रश्नकर्ता : तो प्रेम का स्थान कहाँ आया? प्रेम की स्थिति किस जगह होती है तो फिर?

दादाश्री : प्रेम तो, वह जितना वीतराग बना उतना प्रेम उत्पन्न होता है। संपूर्ण वीतराग को संपूर्ण प्रेम!

प्रश्नकर्ता : जहाँ संपूर्ण वीतराग वहाँ संपूर्ण प्रेम!

दादाश्री : वीतद्वेष तो आप सब हो ही चुके हो। अब धीरे-धीरे वीतराग होते जाओगे हर एक चीज़ में। इसमें वह अनुभव हो गया, वही वीतराग। इसका अनुभव वीतराग होते, होते, होते, होते जो हैं किसी-किसी मनुष्य की वृत्तियाँ ऐसी होती है कि जो (संपूर्ण) वीतरागता नहीं भी हुई हों। (दादाश्री स्वयं अपने आप के लिए यह बात कह रहे हैं, क्योंकि ३५६ ड्रिगी पर हैं।) मुझे पूरा जगत् निर्दोष दिखाई देता हैं लेकिन वह श्रद्धा से। श्रद्धा से यानी दर्शन में और दूसरा अनुभव में भी आया है कि निर्दोष हैं ही। अनुभव में हंड्रेड परसेन्ट आ गया है।

अब जितना द्वेष जाएगा, उतना शुद्ध प्रेम उत्पन्न होगा। शुद्ध प्रेम को उत्पन्न होने के लिए क्या जाना चाहिए अपने में से? कोई चीज़ निकल जाए तब वह चीज़ आएगी। यानी कि यह वैक्यूम (खाली जगह) नहीं रह सकता। इसमें से अगर द्वेष जाएगा, तब शुद्ध प्रेम उत्पन्न होगा। इसलिए जितना भेद

जाए उतना शुद्ध प्रेम उत्पन्न होता है। संपूर्ण द्वेष जाए तब संपूर्ण शुद्ध प्रेम उत्पन्न होता है। यही रीति है।

मेरे पास तो एक ही हथियार है 'प्रेम' का

जगत् जिन हथियारों को लेकर सामना करता है, क्रोध-मान-माया-लोभ के, वे हथियार मैंने नीचे रख दिए हैं। मैं वे काम में नहीं लेता। मैं जगत् को प्रेम से जीतना चाहता हूँ। 'मैं किसी से झगड़ा करना नहीं चाहता, मेरे पास तो सिर्फ एक प्रेम का ही हथियार है।' और कुछ भी नहीं हैं।

जगत् जिसे प्रेम समझता है, वह तो लौकिक प्रेम है। प्रेम तो वह कि आप अगर मुझे गालियाँ दो तो मैं डिप्रेस न होऊँ और हार चढ़ाओ तो एलिवेट न हो जाऊँ। सच्चे प्रेम में तो फर्क ही नहीं पड़ता। इस देह के भाव में फर्क पड़ सकता है, लेकिन शुद्ध प्रेम में नहीं। यह अच्छा-बुरा तो बुद्धि के अधीन है।

आत्मा के प्रति बनें सिन्सियर

प्रश्नकर्ता : यह बात ठीक तरह से समझ में आ गई कि जब तक प्रगट पुरुष के हृदय में से जिस प्रेम का अनुभव मिलता है वही प्रेम हैं, उसके सिवा कहीं प्रेम नहीं है।

दादाश्री : यह तो भ्रांति से आसक्ति को प्रेम कहते हैं, लोग। जो कम-ज़्यादा हो, वह आसक्ति है, अटैचमेन्ट-डिटैचमेन्ट कहलाता है। जो कम-ज़्यादा नहीं होता, वही प्रेम है और वही परमात्मा प्रेम है, वही शुद्ध प्रेम है। शुद्ध प्रेम वह परमात्मा प्रेम माना जाता है।

प्रश्नकर्ता : वैसा शुद्ध प्रेम किस तरह उत्पन्न होता है?

दादाश्री : पूरा जगत् जब निर्दोष दिखाई देगा तब प्रेम उत्पन्न होगा। ये मेरे-तेरे कब तक लगता है कि जब तक हम दूसरों को अलग मानते हैं। जब तक उनसे भेद है, तब तक ये मेरे अपने लगते हैं, इस कारण से ये अटैचमेन्टवालों को अपना मानते हैं और डिटैचमेन्टवालों को पराया मानते हैं। वे किसी के साथ प्रेमस्वरूप नहीं रह सकते । यानी प्रेमस्वरूप, यह प्रेम, वह परमात्मा गुण है। इसलिए वहाँ पर खुद के अपने सभी दुःख विस्मृत हो जाते हैं उस प्रेम से। यानी प्रेम से बंध गया, इसलिए फिर बाँधने को कुछ और रहा नहीं। और जो ज्ञानीपुरुष से, आत्मा से, रियल से हमेशा सिन्सियरली रहना चाहिए और देह से, देहाध्यास वगैरह सबके साथ ट्रुली रहना चाहिए। सिन्सियर नहीं रहना चाहिए। योर्स ट्रुली लिखते हैं न हम?

प्रश्नकर्ता : हाँ, योर्स ट्रुली लिखते हैं।

दादाश्री : सिन्सियर आत्मा के साथ और ज्ञानीपुरुष के प्रति रहना हैं। अन्य जगह पर ट्रुली लिखना है इसलिए हम ट्रुली लिखते हैं। अन्य जगह सन्सियर नहीं रहते, सिन्सियर आपके आत्मा के प्रति रहते हैं। इसलिए इसे समझ लेना ज़रूरी है कि कहाँ ट्रुली इस्तेमाल करना है और कहाँ सिन्सियरली इस्तेमाल करना है। लोग पत्र लिखते हैं, वे हमें ऐसा लिखा करते हैं न ट्रुली, आपका ट्रुली, योर्स ट्रुली, अतः हमें योर्स ट्रुली रखना चाहिए। और योर्स सिन्सियरली उसे समझ लेना चाहिए।

प्रश्नकर्ता : दादाजी, ऐसा भेद तो किसी ने बताया ही नहीं न! ट्रुली और सिन्सियरली तो रोज़ इस्तेमाल करते हैं, लेकिन कहाँ इस्तेमाल करना है, यह किसे मालूम?

दादाश्री : नहीं लेकिन, वह तो मैं जो जानता हूँ, वह आपको कह देता हूँ। मेरे पास जो है, वह दे दिया है। मैं जिस रास्ते चला हूँ वही रास्ता मैंने आपको दिखा दिया है। आपको मैंने अपने से कहीं

बहुत दूर नहीं रखा है। आपको मेरे साथ ही रखा है। क्योंकि बहुत दूर तो कौन रखता है? गुरु। कौन से गुरु कि जिसे लोगों पर अधिकार जताना हो। कुछ चाहिए, कुछ इच्छाएँ हों, वे लोग दूरी बनाए रखते हैं। चाबियाँ अपने पास रखे रखते हैं। मैंने सभी चाबियाँ दे दी हैं। कुछ चाहिए ही नहीं फिर वैसा किसलिए? और यदि अधिकार जताना हो, जिसे कुछ चाहिए, वे गुरु वे दो चाबियाँ अपने पास रहने देते हैं। शिष्य को डपटने के काम आए कि 'देखो अब नहीं दूँगा, हाँ।' और यहाँ तो तू विरोधी हो जाए फिर भी हर्ज नहीं। मेरे विरुद्ध हुआ तो मैं समझूँ कि परमात्मा हुआ। विरोधी बनने की तैयारी करता है न इसका अर्थ यह है कि उतनी शक्ति आए तब होता है न? विरोधी बन लेकिन ऐसे बेक मत रहना। इसलिए यह टुली और सिन्सियरली यदि समझ में आ जाए, तो बहुत समझने लायक वाक्य हैं दोनों।

प्रश्नकर्ता : बात सही है, समझने लायक हैं। क्योंकि कभी भी कहीं भी खिंच जाते हैं।

दादाश्री : हाँ, बस, ऐसा ही हुआ है। इसलिए प्रेम उत्पन्न होगा ही नहीं न! देह के प्रति अगर सिन्सियरली रहना चाहो तो प्रेम कैसे उत्पन्न होगा? आप कभी भी सिन्सियरली रहे हो देह के प्रति?

प्रश्नकर्ता : वैसे रहते हैं।

दादाश्री : जब तक नहीं समझते तब तक तो सबकुछ...

प्रश्नकर्ता : दादाजी, अब इसमें से एक और प्रश्न खड़ा होता है कि देह के प्रति सिन्सियर नहीं रहे, ऐसा ठीक है क्या?

दादाश्री : टुली रहना है।

प्रश्नकर्ता : लेकिन सिन्सयर नहीं रहना चाहिए?

दादाश्री : सिन्सियर आत्मा के प्रति। इन सभी के आत्माओं के प्रति हमें सिन्सियर रहना चाहिए और उन सब की देह के प्रति टुली रहना चाहिए (देह के प्रति) सिन्सियर होने से आसक्ति पैदा होगी।

प्रश्नकर्ता : लेकिन ज्ञानीपुरुष की देह का आधार लेकर....

दादाश्री : वह तो स्वाभाविक रूप से वैसा प्रेम उत्पन्न होता है। प्रेम से प्रेम उत्पन्न होता है लेकिन यह जो प्रेम है, वहाँ आसक्ति नहीं होती। आसक्ति कब कहलाती है कि जब कोई संसारी चीज़ प्राप्त करनी हो तब, जब संसारी चीज़ का हेतु होता है तब। यह सच्चे सुख के लिए तो होता है, वह तो होगा, उसमें हर्ज नहीं। हम पर जो प्रेम रहता है उसमें कोई हर्ज नहीं। वह आपको हेल्प करेगा। अन्य पर से प्रेम हटा देगा। अन्य टेढ़ी-मेढ़ी जगहों पर खर्च होनेवाला प्रेम, वहाँ से हट जाएगा।

रिलेटिव पार करें, वहीं से प्रेम की शुरूआत

प्रेम तो, जब पूरे रिलेटिव डिपार्टमेन्ट को पार कर लें तब उत्पन्न होता है। जब निरालंब होगा, स्वावलंब हो जाएगा तब प्रेम उत्पन्न होगा। पहले तो परालंब था न?

और जब से ज्ञानी पर प्रेम भाव आया न, वहीं से सारा समाधान होता जाता है।

प्रश्नकर्ता : यानी जिसे ज्ञानी की हूँफ (सहारा, रक्षण) मिली हो, वह बाद में ज्ञानी की हूँफ से निरालंब हो सकता है न?

दादाश्री : बन सकता है न! निरालंब बनने का रास्ता ही यही है न!

प्रश्नकर्ता : यदि ज्ञानी की हूँफ नहीं मिल पाए तो? तो क्या फिर निरालंब नहीं बन सकता?

दादाश्री : हर एक जन्म में स्त्री-बच्चों के सिवा और कुछ रहता ही नहीं है न! जानवरों की

योनि में जाए तो भी स्त्री-बच्चे, जहाँ जाए वहाँ। देवलोक में भी स्त्री (होती है)। बच्चे नहीं होते वहाँ पर। अनंत जन्मों से स्त्री-बच्चों को ढो रहा है लेकिन कभी ज्ञानियों का साथ नहीं पकड़ा और ना ही प्रेमभाव आया है उन पर। यदि आ जाए तो निबेड़ा ही आ जाए।

आखिर में तो कभी न कभी निरालंब तो बनना ही पड़ेगा न, तब तक तो अवलंबन लेना पड़ेगा! सत् का अवलंबन लेना पड़ेगा।

ज्ञानीपुरुष से ज्ञान प्राप्ति के बाद से ही, फिर निरालंब होने लगते हैं। निरालंब होने की शुरूआत हो गई है। फिर भी जब तक संपूर्ण निरालंब तो नहीं हो जाते, तब तक सहारा ढूँढता ही रहे।

बाहर सच्चा प्रेम ढूँढे, लेकिन वह कहीं भी नहीं मिले, तब आत्मा प्रकट होता है।

'प्रेम' से आत्म विटामिन प्राप्त होता है सहज ही

प्रेम को तो विटामिन कहा जाता है। प्रेम तो विटामिन कहलाता है। जब ऐसा प्रेम देखें न, तब उसमें विटामिन उत्पन्न होता है, आत्म विटामिन। देह के विटामिन तो बहुत दिनों खाए हैं, लेकिन आत्मा का विटामिन नहीं चखा है न! उससे आत्मवीर्य प्रकट होता है, ऐश्वर्य प्रकट होता है।

प्रश्नकर्ता : वह सहज ही होता है न, दादा?

दादाश्री : सहज।

प्रश्नकर्ता : इसलिए उसे उसमें किसी प्रकार का कुछ करने को रहता ही नहीं।

दादाश्री : कुछ भी नहीं। यह पूरा मार्ग सहजता का ही है।

अहंकार विलय होने से उमड़े शुद्ध प्रेम

प्रश्नकर्ता : अभी दुनिया में सभी लोग शुद्ध प्रेम के लिए व्यर्थ प्रयत्न कर रहे हैं।

दादाश्री : यह रास्ता शुद्ध प्रेम का ही है। अपना यह जो विज्ञान है न, किसी भी तरह की, किसी भी प्रकार की इच्छा रहित है, इसलिए शुद्ध प्रेम का रास्ता यह उद्‌भव हुआ है, वर्ना होता नहीं इस काल में। लेकिन इस काल में उत्पन्न हुआ, वह आश्चर्य हुआ है!

जब तक अहंकार है, तब तक शुद्ध प्रेम आ ही नहीं सकता न! अहंकार और शुद्ध प्रेम दोनों साथ में ही नहीं रह सकते। शुद्ध प्रेम कब आता है? अहंकार जब विलय होने लगे, तब से शुद्ध प्रेम आने लगता है और जब अहंकार संपूर्णरूप से विलय हो जाए, तब शुद्ध प्रेम की मूर्ति बन जाता है। शुद्ध प्रेम की मूर्ति, वही परमात्मा है। वहाँ पर आपका सभी प्रकार का कल्याण हो जाता है। वह निष्पक्षपाती होता है, कोई पक्षपात नहीं होता। शास्त्रों से पर होता है। चार वेद पढ़ने के बाद वेद 'इटसेल्फ' कहते हैं, 'दिस इज़ नोट देट, दिस इज़ नोट देट।' तो ज्ञानीपुरुष कहते हैं, दिस इज़ देट, बस! 'ज्ञानीपुरुष' तो शुद्ध प्रेमवाले, इसलिए तुरंत ही आत्मा दे देते हैं!

शुद्ध प्रेम और शुद्ध न्याय, ये दोनों गुण हैं उनके पास। जब इस जगत् में शुद्ध न्याय होगा, तब समझना कि यह भगवान की कृपा उतरी। शुद्ध न्याय!

संसार खड़ा है बैर से, प्रेम से नहीं

भगवान में शुद्ध प्रेम होता है। संसार बैर से खड़ा है, प्रेम से नहीं। फाउन्डेशन प्रेम का है ही नहीं, बैर का फाउन्डेशन है। प्रेमवाले हिसाब तो अस्त हो जाएँगे, लेकिन बैरवाले हिसाब शेष रहेंगे। प्रेम तो अंत में प्रशस्त होकर ज्ञानीपुरुष या किसी में बैठ जाएगा। जब तक मिलते-जुलते परमाणु हों, तब तक अभेदता रहती है और फिर (मिलते-जुलते नहीं हों तो) बैर हो जाता है। जहाँ आसक्ति होती

है, वहाँ बैर होता ही है। लौकिक प्रेम का फल बैर ही है।

सभी में 'मैं' हूँ देखा करें वह है प्रेम मूर्ति

आपको समझ में आया 'पोइन्ट ऑफ व्यू'? यह अलग तरह का है और प्रेममूर्ति बन जाना है। सभी एक ही लगें, जुदाई लगे ही नहीं। यह तो कहेंगे, 'यह हमारा और यह आपका।' लोकिन यहाँ से जाते समय क्या 'हमारा-आपका' रहता है? यानी कि इस रोग के कारण जुदाई लगती है। यह रोग निकल जाए, तो प्रेममूर्ति हो जाएगा।

प्रेम यानी यह सारा ही 'मैं' ही हूँ, 'मैं' ही दिखता हूँ, नहीं तो 'तू' कहना पड़ेगा। 'मैं' नहीं दिखेगा तो 'तू' दिखेगा। दोनों में से एक तो दिखेगा ही न? व्यवहार में बोलना ऐसे कि 'मैं, तू।' लेकिन दिखना तो 'मैं' ही चाहिए न! प्रेमस्वरूप यानी क्या? कि सभी को अभेदभाव से देखना, अभेदभाव से वर्तन करना, अभेदभाव से चलना, अभेदभाव ही मानना। 'ये अलग हैं' ऐसी-वैसी मान्यताएँ सब निकाल देनी। इसी को प्रेमस्वरूप कहते हैं। एक ही परिवार हो ऐसा लगे।

प्रेमस्वरूप बनने के लिए...

यानी अब ये लोग अच्छे हैं। किसी को नुकसान नहीं पहुँचे, एक दूसरे से एडजस्ट होकर... इस प्रकार सभी में कुछ झंझट न हो, सभी उस तरह से संभलकर ऐसा कुछ तो करो! कुछ प्रेम दिखाओ! प्रेम दिखता ही नहीं है। वहाँ कुछ भूलचूक रह जाती होगी? कौन सी भूल होगी वह? यह जो मैं तुम्हें कह रहा हूँ। यह है तो कड़वा, लेकिन वह तुझे क्यों मीठा लग रहा है? उसकी तू प्रशंसा करता है क्योंकि तेरे लिए हितकारी है इसलिए। वह ज़्यादा हितकारी हैं इससे।

प्रश्नकर्ता : वह किस तरह, दादाजी? वह समझाइए न!

दादाश्री : तभी आप पास होओगे। वर्ना पास ही नहीं हो पाओगे। दादा का लाख बार सुनते रहोगे लेकिन जब तक यह नहीं करोगे (प्रेमस्वरूप नहीं बनोगे), तब तक पास नहीं हो पाओगे।

प्रश्नकर्ता : यह उसी का परिणाम ही है न, सुने हुए का?

दादाश्री : नहीं, पास ही नहीं हो पाओगे वहाँ! फेल (नापास) ही होते रहोगे। सिर्फ सुनते ही रहने से दादा का। अब यह मुख्य चीज़ यदि करो तो बहुत हो गया। मेरा कम सुनोगे तो चलेगा। खुद की भूल देखने की शक्ति बहुत बढ़ गई है अब तो।

प्रश्नकर्ता : लेकिन दादाजी, भूल करने की शक्ति भी बहुत बढ़ गई है।

दादाश्री : वह जो बढ़ गई है उसे तो मैं तमाचा लगाऊँगा न! तमाचा मारे बगैर रहूँगा नहीं न! मैं समझ जाता हूँ कि 'यह उल्टा चला अब।' भूल समझने की शक्ति बहुत अच्छी आ गई है। लेकिन ये सारी भूलें दिखाई देनी चाहिए। वीतराग यानी क्या? ना पसंद हो वैसी अनचाही बात का आनंदपूर्वक स्वीकार करना। वर्ना फिर तेरा मनमेल ही नहीं बैठेगा फिर। ज़रा सा कुछ हुआ नहीं कि छूट गई बात।

अब प्रेमस्वरूप बन जाओ

कोई गालियाँ दें फिर भी आप प्रेमस्वरूप बन जाओ। आप हमें प्रेमस्वरूप देखती हो, कितने सालों से साथ में हो? अब आपको ऐसा बनना है न?

नीरू माँ : बनना है दादाजी।

दादाश्री : यदि मैं कहूँ कि आप बेअक्ल हो। तब कहना कि 'वह तो मैं जान गई कि, आप किसे कह रहे हैं।' इसलिए अब प्रेमस्वरूप बन जाओ।

प्रेम कब उत्पन्न होगा? जब सामनेवाले के साथ आज तक आपसे जितनी भूलें हुई हों, उनके लिए माफी माँग लोगी, तब प्रेम उत्पन्न होगा।

नीरू माँ : दादाजी, माफी माँगना बहुत ईज़ी (सरल) है, आसान है।

दादाश्री : मेरी बात अच्छी लगेगी? समझ में आएगी तो अच्छी लगेगी।

प्रश्नकर्ता : दादाजी खुद को छूटना है, इसलिए अच्छी लगती है।

दादाश्री : छूटना है या दादा के साथ अभेद होना है?

प्रश्नकर्ता : अर्थात् दादा से नहीं, खुद के दोषों से छूटना हैं, इसलिए अच्छा लगता है, दादा। दादा के साथ तो निरंतर अभेदता ही चाहिए।

दादाश्री : दादा से अभेदता यानी मुक्ति हो ही जानी है, मुक्त हो ही जाओगे।

और आप चाहे जितनी माफी माँगो पैर छूकर, फिर भी व्यर्थ है। दादा की आज्ञा के अनुसार चलो आप कि 'किसी से एक भी दोष नहीं हुआ है, लेकिन मुझे ऐसा दिखा, इसलिए वहाँ मेरा ही दोष था।' जिस किसी के साथ प्रेम रखना हो, उनके लिए इसी तरह रखना चाहिए। तभी अंदर प्रेम उत्पन्न होगा। रखना है या नहीं रखना प्रेम?

नीरू माँ : हाँ, दादाजी।

दादाश्री : हमारे तरीके से हो सकता है। हम जिस तरीके से पार उतरे हैं, उसी तरह से पार उतारते हैं हम।

यह प्रेममय मार्ग है। जिसे जगत् में किसी पर भी तिरस्कार भाव नहीं आए, वह परमात्मा बन सकता हैं!

आप प्रेम उत्पन्न करोगे न? जब प्रेमस्वरूप बनेंगे तभी सामनेवाले के साथ अभेदता रह पाएगी। हमारे साथ ज़्यादात्तर सारा इसी तरह से हुआ है। यह तरीका बता दिया हैं हमने।

मतभेद होने की जगह पर आकर भी यदि मतभेद नहीं पड़े तो सही है। जबकि ये तो वहाँ से हट जाते हैं इसका क्या अर्थ है?

कल्याण स्वरूप कब बन सकेंगे? जब सभी को प्रेम आए हम पर। सभी को पूज्यता उत्पन्न हो। यदि सो रहा हो या ऊँघ रहा हो न, तो उसे भी नमस्कार कर जाते हैं। तू तो जागते हुए को भी नमस्कार नहीं करता तो ऊँघते हुए को कैसे करेगा? पहले हम कल्याण स्वरूप बनेंगे तब जाकर सारा काम होगा। कल्याण स्वरूप हो जाना चाहिए पहले!

अंत में ज़रूरत है प्योरिटी के साथ शुद्ध प्रेम की

प्रश्नकर्ता : अपना यह छोटा सा संघ है अक्रम का, तो यह पूरी दुनिया को कैसे सुधार सकेगा?

दादाश्री : पाँच ही लोग सुधार सकेंगे। अरे, एक ही व्यक्ति यदि बिल्कुल सत्य व प्रेम, शुद्ध प्रेम रखे, तो वह पूरी दुनिया को हिलाकर सुधार सकता है। शुद्ध प्रेम की आवश्यकता है। संघ कुछ नहीं कर सकते। संघ तो हैं, अरबों लोग हैं, लेकिन कुछ नहीं हो सकता।

खुद प्रेमस्वरूप कब बन पाएगा? वह पूरी तरह से प्योर हो जाए तब। देह भी प्योर, मन भी प्योर, सबकुछ प्योर हो जाए तब प्रेमस्वरूप बन सकेगा। और प्रेमस्वरूप के दर्शन करने से सामनवाले भी प्रेमस्वरूप बन जाते हैं। जिसकी भजना करे, वैसा ही बन जाता है। यही नियम है। यह विज्ञान प्रेमस्वरूप है।

- जय सच्चिदानंद

दादाई जगकल्याण मिशन - सत्संग हाइलाईट्स

१७-१८ मई : अडालज त्रिमंदिर में आयोजित सत्संग-ज्ञानविधि कार्यक्रम में १५५० मुमुक्षुओं ने आत्मज्ञान प्राप्त किया।

२०-२२ मई : भादरण सिंचन के ४१ साधकों के लिए तीन दिन के वार्षिक शिविर का आयोजन हुआ। शिविर में ब्रह्मचर्य सत्संग, पर्सनल डिस्कशन, इन्फोर्मल सत्संग और अनुभव सेशन, मोर्निंग वॉक, नाटक, गरबा जैसे कार्यक्रम हुए। साधकों को पूज्यश्री के साथ सामूहिक भोजन का विशेष लाभ प्राप्त हुआ। भादरण के महात्माओं के लिए पूज्यश्री के दर्शन और मंदिर में सामूहिक आरती का भी विशेष आयोजन हुआ। पूज्यश्री की दिनचर्या नज़दीकी से देखने मीली, जिससे साधकों को कुछ विशेष अनुभव हुआ।

२३ मई : गोधरा में आयोजित एक दिन के कार्यक्रम में स्थानिक महात्माओं को पूज्यश्री के दर्शन और दादा दरबार (पूज्यश्री को व्यक्तिगत मिलने का अवसर) का अमूल्य लाभ प्राप्त हुआ। पूज्यश्री ने मंदिर में दर्शन करके स्थानिक सेवार्थियों को व्यक्तिगत मार्गदर्शन दिया। सेवा की महत्वता समझने से सभी महात्माओं ने सेवा देने का भाव प्रकट किया।

२४-२५ मई : बहुत सालों के बाद दाहोद में पूज्यश्री का सत्संग-ज्ञानविधि का आयोजन हुआ। ६५० मुमुक्षुओं ने आत्मज्ञान प्राप्त किया। सेवार्थियों के लिए पूज्यश्री का विशेष सत्संग-दर्शन का आयोजन हुआ। ज्ञानविधि के बाद आप्तपुत्रों द्वारा फोलोअप सत्संग का भी आयोजन हुआ। जिनमें बहुत लोगों ने भाग लिया था।

२७-२८ मई : अडालज त्रिमंदिर में पूज्यश्री द्वारा 'माँ-बाप-बच्चों का व्यवहार' विषय पर विशेष सत्संग हुआ।

२९ मई-२ जून : हर साल की तरह इस साल भी हिन्दी शिविर का आयोजन हुआ। पहले दिन 'प्रतिक्रमण' पुस्तक पर पारायण हुआ। दूसरे दिन महात्मा बहनें और महात्मा भाईओं के लिए 'ब्रह्मचर्य' पर विशेष सत्संग अलग-अलग सेशन में आयोजित हुए। तीसरे दिन आयोजित ज्ञानविधि कार्यक्रम में ७२५ मुमुक्षुओं ने आत्मज्ञान प्राप्त किया। चौथे दिन पूज्यश्री के दर्शन का कार्यक्रम और ज्ञानविधि फोलोअप सत्संग आयोजित हुआ। रात्रि सेशन में भक्ति, गरबा, पूज्य नीरू माँ की फिल्म और सत्संग हाईलाइट्स डीवीडी कार्यक्रम का आयोजन हुआ। २ जून को पूज्य की निश्रा में आगलोड तीर्थयात्रा का आयोजन हुआ, जिनमें मणीभद्र वीर, पार्श्वनाथ, ऋषभदेव, वगैरह भगवंतों के दर्शन किए। पूज्यश्री ने जगत् कल्याण की भावना और सीमंधर स्वामी की आरती की और बाद में १ घंटे का विशेष सत्संग का आयोजन हुआ। शाम को पूज्यश्री के संग महात्माओं ने गरबा का विशेष लाभ लिया। लगभग २००० हिन्दी महात्माओं ने शिविर में भाग लिया था।

४-५ जून : अडालज त्रिमंदिर में पूज्यश्री का 'पति-पत्नी का दिव्य व्यवहार' पर विशेष सत्संग हुआ।

६-७ जून : गुजरात के विविध सेन्टर तथा त्रिमंदिर संकुल के विविध डिपार्टमेन्ट के लगभग ३०० कॉर्डिनेटरों के लिए दो दिन की शिविर आयोजित हुई। पूज्यश्री ने पहले और अंतिम दो सेशन में सेवा का महत्व और उसमें होनेवाले कषाय से निकलने की चाबियाँ, टीमवर्क, कॉम्यूनिकेशन वगैरह पर सुंदर सत्संग किया। जानेमाने ट्रेनर द्वारा विविध प्रवृत्तियों द्वारा विविध विषयों पर असरकारक रजूआत हुई। महात्माओं ने सेवा-साधना के समन्वय पर हास्य नाटिका प्रस्तुत की।

८ जून : अडालज त्रिमंदिर संकुल में सीमंधर सिटी तथा अंबा टाउनशीप के महात्माओं के लिए 'आनंदोत्सव' का आयोजन हुआ। खाने-पीने के अलग-अलग स्टोल पर महात्माओं ने चटपटे स्वाद का आनंद उठाया। बच्चों के लिए विविध एक्टिविटी रखी गई थीं। कार्यक्रम दौरान भक्ति, कौशल्य प्रदर्शन तथा '*खणखोद*' (कानाफूसी) पर हास्यनाटिका महात्माओं द्वारा रजू की गई और अंत में आरती और एन्थम गाए।

९ जून : अमरिका-केनेड़ा के ५० दिन के सत्संग प्रवास के लिए पूज्यश्री ने सीमंधर सिटी से प्रस्थान किया। अडालज में अंबा स्कूल फोर एक्सेलन्स में जून २०१४ के नए सत्र से नर्सरी से स्टान्डर्ड -१ तक अंग्रेजी माध्यम शुरू हुआ।

आत्मज्ञानी पूज्य नीरू माँ और पूज्य दीपकभाई के आशीर्वाद प्राप्त आप्तपुत्रीओं के सत्संग कार्यक्रम
(केवल बहनों के लिए, रजिस्ट्रेशन आवश्यक)

पुणे **दिनांक : 22-24 जुलाई** **समय और रजिस्ट्रेशन के लिए संपर्क :** 9370022022
स्थल : होटल गोल्डन एमरल्ड, महर्षिनगर कोर्नर के पास, मार्केट यार्ड, पुणे.

जालंधर **दिनांक : 24-25 जुलाई** **समय और रजिस्ट्रेशन के लिए संपर्क :** 9814063043
स्थल : हाउस नं. 1236, अर्बन एस्टेट फेज-1, जालंधर.

कोलकाता **दिनांक : 24-25 जुलाई** **समय और रजिस्ट्रेशन के लिए संपर्क :** 033-32933885
स्थल : कामानी जैन भवन, 3A रे स्ट्रीट, कोलकाता.

इन्दौर **दिनांक : 26-27 जुलाई** **समय और रजिस्ट्रेशन के लिए संपर्क :** 9893545351
स्थल : श्रीजी एवन्यु (पुराना धाधु भवन), 63-कैलाश मार्ग, मल्हार गंज, अंतिम चौराहे के पास, इन्दौर.

भिलाई **दिनांक : 27-28 जुलाई** **समय और रजिस्ट्रेशन के लिए संपर्क :** 9827874148
स्थल : दादा भगवान सत्संग सेन्टर, मरोदा वोटर टेन्क के पास, भिलाई.

भोपाल **दिनांक : 28-29 जुलाई** **समय और रजिस्ट्रेशन के लिए संपर्क :** 9425023328
स्थल : जनकविहार कोम्प्लेक्स, एयरटेल ओफिस के सामने, मालवियानगर, भोपाल.

जबलपुर **दिनांक : 30 जुलाई** **समय और रजिस्ट्रेशन के लिए संपर्क :** 9425385656
स्थल : होटेल समदड़िया इन, रसैल चौक, जबलपुर.

पूज्य नीरूमाँ को देखिए टी.वी. चैनल पर...

भारत
- **'आस्था'** पर हर रोज़ रात १०-२० से १०-४० (हिन्दी में)
- **'साधना'** पर हररोज - सुबह ७-४० से ८-०५ (हिन्दी में)
- **'दूरदर्शन' - बिहार** पर हर रोज़ सुबह ७ से ७-३० तथा रविवार शाम ४ से ४-३० (हिन्दी में)
- **'दूरदर्शन' - गुजरात-गिरनार** पर हर रोज़ सुबह ७ से ७-३० (गुजराती में)
- **'अरिहंत'** पर हर रोज़ सुबह १० से १०-३०, दोपहर ३-३० से ४ (गुजराती में)

USA - **'TV Asia'** पर हर रोज, सुबह ७-३० से ८ EST (गुजराती में)

Singapore - **'सब टीवी'** पर हर रोज़ सुबह ८ से ८-३० (हिन्दी में) - **नया कार्यक्रम**

Australia - **'सब टीवी'** पर हर रोज़ सुबह १० से १०-३० (हिन्दी में) - **नया कार्यक्रम**

Dubai - **'सब टीवी'** पर हर रोज़ सुबह ३ से ३-३० (हिन्दी में) - **नया कार्यक्रम**

पूज्य दीपकभाई को देखिए टी.वी. चैनल पर...

भारत
- **'दूरदर्शन-नेशनल' पर हर मंगलवार से शुक्रवार सुबह ९-३० से १० (हिन्दी में)**
- **'साधना'** पर हर रोज़ शाम ७-१० से ७-४० (हिन्दी में)
- **'दूरदर्शन' गुजरात -गिरनार** पर हर रोज़ दोपहर ३-३० से ४ (गुजराती में)
- **'दूरदर्शन' गुजरात -गिरनार** पर हर रोज़ रात ९ से ९-३० (गुजराती में)
- **'अरिहंत' चेनल** पर हर रोज़ रात ८-३० से ९ (गुजराती में)
- **'दूरदर्शन-सह्याद्रि'** पर हर रोज़ सुबह ७ से ७-३० (मराठी में)

USA - **'TV Asia'** पर हर रोज, सुबह ११ से ११-३० EST

USA-UK - **'आस्था'** (डीश टीवी चेनल 849-युके, 719-युएसए) पर हर रोज़ रात ९-३० से १० (गुजराती में)

आत्मज्ञानी पूज्य दीपकभाई के सांनिध्य में आगामी सत्संग कार्यक्रम

पुणे

८-९ अगस्त (शुक्र-शनि) - शाम ६ से ८-३० **सत्संग** तथा **१० अगस्त** (रवि), शाम ५ से ८-३० - **ज्ञानविधि**
स्थल : वर्धमान सांस्कृतिक केन्द्र, आई माता मंदिर के पास, गंगाधाम चौक, मार्केट यार्ड. **संपर्क :** 9422660497

अडालज त्रिमंदिर

१४ अगस्त (गुरु) - शाम ४ -३० से ७ - **सत्संग** तथा **१५ अगस्त** (शुक्र), दोपहर ३-३० से ७ - **ज्ञानविधि**
१७ अगस्त (रवि) - रात १० से १२ - **जन्माष्टमी अब पूज्यश्री की निश्रा में अडालज में मनाई जाएगी.**
२२ से २९ अगस्त (शुक्र से शुक्र) **पर्युषण पारायण - आप्तवाणी ३** तथा **७** पर **वांचन-सत्संग-प्रश्नोत्तरी**
३० अगस्त (शनि) सुबह ९ बजे से - **दर्शन** का विशेष कार्यक्रम

पाली

६ सितम्बर (शनि) - शाम ७ से ९-३०- **सत्संग** तथा **७ सितम्बर** (रवि), शाम ६-३० से ९-३० - **ज्ञानविधि**
स्थल : अनुव्रत नगर, रामलीला मैदान के पास. **संपर्क :** 9252065202

कोलकाता

९-१० सितम्बर (मंगल-बुध) - शाम ६ से ८-३० **सत्संग** तथा **११ सितम्बर** (गुरु), शाम ५-३० से ८-३० - **ज्ञानविधि**
स्थल : विद्या मंदिर (हिन्दी हाईस्कूल), मीन्टो पार्क के पास, 1, मोईरा स्ट्रीट. **संपर्क :** 9830006376

पटना

१३ सितम्बर (शनि) - शाम ५-३० से ८ **सत्संग** तथा **१४ सितम्बर** (रवि), शाम ३-३० से ७ - **ज्ञानविधि**
स्थल : रविन्द्र भवन, बीरचंद पटेल पथ, ए.जी.ओफिस बिल्डींग के पास, सर्किट हाउस के सामने. **संपर्क :** 9471000240

आत्मज्ञानी पूज्य नीरू माँ और पूज्य दीपकभाई के आशीर्वाद प्राप्त आप्तपुत्रों के सत्संग कार्यक्रम

पुणे **दिनांक : 31 जुलाई से 3 अगस्त तथा 6 अगस्त**
समय और स्थल की जानकारी के लिए **संपर्क :** 9422660497

अहमदनगर **दिनांक : 4 अगस्त** **समय :** शाम 5 से 7 **संपर्क :** 9421558771
स्थल : श्री कृष्ण सर्व कल्याणं सामाजिक प्रतिष्ठान होल, कला, वाणिज्य व विज्ञान महाविद्यालय के पास, पेट्रोल पंप के सामने, पाइपलाइन रोड, सावेडी, अहमदनगर.

सतारा **दिनांक : 5 अगस्त** **समय :** शाम 4-30 से 7 **संपर्क :** 9421212685
स्थल : महिला मंडल होल, राजवाडा, गांधी मैदान के सामने, सतारा.

दादावाणी' के वार्षिक सदस्यों के लिए सूचना

आपको आपकी दादावाणी पत्रिका की सदस्यता समाप्त हो रही है उसका पता कैसे चलेगा? यदि आपको मिली इस महीने की दादावाणी पत्रिका के कवर पर लगे हुए लेबल पर ग्राहक नं. के बाद # हो तो यह आपकी अन्तिम दादावाणी पत्रिका है। उदा. DHIA12345 #. दादावाणी पत्रिका रिन्यु कराने के लिए पेज नं. ३ पर दर्शाये गए मूल्य अनुसार मनी आर्डर या डिमान्ड ड्राफ्ट (पेयेबल अहमदाबाद) त्रिमंदिर अडालज के पते पर भेजें। साथ ही अपना नाम, पूरा पता (पिनकोड के साथ), फोन-मोबाइल नंबर, इ-मेल आदि आवश्यक जानकारी दें।

मुख्य सेन्टरों के संपर्क : अडालज त्रिमंदिरः (079) 39830100, **अहमदाबादः** (079) 27540408, **वडोदरा : (दादा मंदिर)** 9924343335,
राजकोट त्रिमंदिरः 9274111393, **भूज त्रिमंदिरः** (02832) 290123, **गोधरा त्रिमंदिरः** (02672) 262300, **मुंबईः** 9323528901,
दिल्लीः 9310022350, **बैंगलूरः** 9590979099, **कोलकताः** 033-32933885, **यु.के.:** +44 330-111-DADA (3232),
यु.एस.ए.-केनेडाः +1 877-505-DADA (3232), **ऑस्ट्रेलियाः** +61 421127947, **केन्याः** +254 722722063

जुलाई २०१४
वर्ष-९ अंक-९
अखंड क्रमांक - १०५

दादावाणी

Date Of Publication On 15th Of Every Month
RNI No. GUJHIN/2005/17258
Reg. No. GAMC - 1500/2012-2014
Valid up to 31-12-2014
LPWP Licence No. CPMG/GJ/15/2012
Valid up to 31-12-2014
Posted at AHD. P.S.O. Sorting Office Set - 1
on 15th of each month.

“ प्रेमस्वरूप हो गए तो हो सकते हैं पूरे जगत् से अभेद ”

प्रेमस्वरूप यानी क्या ? कि सभी को अभेदभाव से देखना, अभेदभाव से वर्तन करना, अभेदभाव से चलना, अभेदभाव ही मानना। 'ये अलग हैं' ऐसी-वैसी मान्यताएँ सब निकाल देनी, उसी को प्रेमस्वरूप कहते हैं। एक ही परिवार हो ऐसा लगे। सच्चा प्रेम सब जगह सारे जगत् को पकड़ सकता है। प्रेम कहाँ-कहाँ होता है ? प्रेम वहाँ होता है कि जहाँ अभेदता होती है। यानी जगत् के साथ अभेदता कब कहलाएगी ? प्रेमस्वरूप हो जाए तो सारे जगत् के साथ अभेदता कहलाती है। तब वहाँ पर और कुछ नहीं दिखता, प्रेम के अलावा। हममें वैसा प्रेम प्रकट हुआ है, तो कितने ही लोग हमारे प्रेम से ही जीते हैं ! निरंतर दादा, दादा, दादा! यानी प्रेम ऐसी चीज़ है!

-दादाश्री

Printed and Published by Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation-Owner. Printed at Amba Offset, Basement, Parshvanath Chambers, Usmanpura, Ahmedabad-380014.